हिन्दू चेतना (पाक्षिक)
E-mail:hinduchetna.patrika@gmail.com

युगाब्द 5120 | हिन्दवः सोदरा सर्वे, न हिन्दूः पतितो भवेत्। मम दीक्षा हिन्दुरक्षा मम मंत्रः समानता॥ | 2075 वि.सं.

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
श्रीमद्भगवद्गीता	3
दिन दर्शिका	4
आध्यात्मिक और व्यावहारिक समरसता	5
अंदाज ऐसा कि तलवार भी धार का नुस्खा पूछा	7
कांग्रेस अपने गिरेबां में भी तो झांके	9
एन.जी.टी. को सुप्रीम कोर्ट ने फटकार लगाई (मस्जिदों की अजान से ध्वनि प्रदूषण का मामला)	10
श्री अश्विनी उपाध्याय जी भारतीय मतदाता संगठन के संगठन प्रमुख बने	11
राष्ट्रीय ख्याति के अम्बिका प्रसाद दिव्य पुरस्कारों हेतु पुस्तकें आमंत्रित	12
विहिप अध्यक्ष द्वारा हरिद्वार में माँ गंगा की पूजा-अर्चना	13
कश्मीर में रमजान पर युद्ध-विराम	14
दुर्गा वाहिनी का शौर्य वर्ग आयोजित	16
उत्तराखंड में मस्जिदों और दरगाहों का जाल फैलाओ	17
धर्मान्तरण: कारण, भ्रम और असलियत	18
झूठ क्यों बोलते हैं राहुल गांधी?	21
सर एक झूठ यह भी है	23
परिषद शिक्षा वर्ग-2018 इन्द्रप्रस्थ क्षेत्र	24
सनातन धर्म की सनातनता कैसे और क्यों?	25

अथैकादशोऽध्यायः

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः ।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव॥५५॥

हे पाण्डुनन्दन अर्जुन! जो केवल मेरे लिये ही प्रत्येक कर्म करता है, मेरे ही परायण रहता है, मेरा ही भक्त है और सम्पूर्ण प्राणियों में वैरभाव से रहित है, ऐसा भक्त मुझको प्राप्त कर लेता है।

दोहा- ध्यान कीर्तन जप तथा, सत्संगति स्वाध्याय ।
यज्ञ दान पूजन तथा, व्रत इत्यादि उपाय ।।
देश काल अरु परिस्थिति, आदिक के अनुसार ।
वर्णाश्रम के कर्म जो, लौकिक विविध प्रकार ।।

इसी भावना से जो करता-जिससे हो मेरी प्रसन्नता हे पाण्डव जो यह कर पाता-वह मत्कर्मकृत् कहलाता जिसका पर ध्येय मैं ही हूँ-पाने योग्य परम मैं ही हूँ मुझे परम उत्कृष्ट समझता-मेरे सदा परायण रहता परमाश्रय जिसका केवल मैं-उसको मत्परमः कहता मैं जो अपना ही मुझे मानता-अपने को मेरा ही मानता अपने को अन्य का न माने-अरु अन्य को न अपना माने ऐसा एक भाव जो रखता-उसको मद्भक्तः मैं कहता

दोहा- मत्कर्मकृत और पुनि, जो केवल मद्भक्त ।
अरु मत्परमः हुआ तो, जग बन्धन से मुक्त ।।
हो जाती मुझसे सदा, तब अनन्य अनुरक्ति ।
मिटती उसकी कामना, ममता जग आसक्ति ।।

स्वयं को जो मम अंश समझता-इसी सत्य का अनुभव करता प्रेमभाव मुझमें हो जाता-जब से राग मुक्त हो जाता उसका भगवत् भाव सब कहीं-वैरभाव लवलेश भी नहीं इन सद्गुण भूषित हो जाता-वही संग वर्जित कहलाता जो अनिष्ट को सहर्ष सहता-यह भी मेरी कृपा समझता इस प्रकार का भक्त मम अतः-सर्व प्राणियों में निर्वैरः भक्ति मेरी जो इस विधि करता-प्राप्त मुझे ही निश्चित करता मुझे जानता दर्शन पाता-मानव जन्म सफल हो जाता

दोहा- मानव को मुझसे मिलीं, प्रमुख रूप दो शक्ति ।
एक देखने की तथा, दूजी चिन्तन शक्ति ।।
चिन्तन जब भी करे तो, विविध विभूति स्वरूप ।
जब भी देखे किसी को, माने मेरा रूप ।।

सुगम गीता व्याख्या पुस्तक से
लेखक - **श्री प्यारेलाल त्रिवेदी**
सी-2/53ए, लॉरेंस रोड, केशवपुरम्, दिल्ली-110035

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष (अधिक) विक्रम संवत् २०७५
१ जून से १५ जून २०१८ ई. तक

सूर्य उत्तरायण — वसन्त ऋतु

दिन	तिथि	नक्षत्र	प्रविष्टि सौर मास	दिनांक आंग्लमास	विशेष विवरण
शुक्रवार	तृतीया	मूल	१६	1	
शनिवार	चतुर्थी	पूर्वाषाढ़	२०	2	गणेश चतुर्थी वत
रविवार	पञ्चमी	उत्तराषाढ़	२१	3	सर्वार्थ सिद्धि योग
सोमवार	षष्ठी	श्रवण	२२	4	पंचक प्रारंभ 28.30, सर्वार्थ सिद्धि योग
मंगलवार	सप्तमी	धनिष्ठा	२३	5	पंचक
बुधवार	अष्टमी	शतभिषा	२४	6	पंचक
गुरुवार	नवमी	पूर्वाभाद्रपद	२५	7	पंचक
शुक्रवार	दशमी	उत्तराभाद्रपद	२६	8	पंचक, सर्वार्थ व अमृत सिद्धि योग
शनिवार	एकादशी	रेवती	२७	9	पंचक समाप्त
रविवार	द्वादशी	अश्विनी	२८	10	कमला पुरुषोत्तमी एकादशी
सोमवार	त्रयोदशी	भरणी	२६	11	सोम प्रदोष व्रत
मंगलवार	चतुर्दशी	कृतिका	३०	12	सर्वार्थ सिद्धि योग, क्षय
बुधवार	अमावस्या	रोहिणी	१	13	अमावस्या
गुरुवार	प्रतिपदा	मृगशिरा	२	14	
शुक्रवार	द्वितीया	आर्द्रा	३	15	सर्वार्थ सिद्धि योग

श्री अष्टावक्र गीता (अष्टावक्र उवाच)

स्वराज्ये, भैक्ष्यवृत्तौ च, लाभालाभे जने वने ।
निर्विकल्प स्वभावस्य न विशेषोऽस्ति योगिनः ॥११। १८

"राज्य में और भिक्षावृत्ति में, लाभ में और हानि में, जन समूह में या वन में, निर्विकल्प योगी को कोई विशेषता नहीं है, अर्थात् उसको इनमें कोई अन्तर दिखाई नहीं देता।"

क्व धर्मः, क्व च वा कामः, क्व चार्थः क्व विवेकता ।
इदं कृतं इदं नेति, द्वन्द्वैर्मुक्तस्य योगिनः ॥१२॥ १८

"यह किया गया है, यह नहीं किया गया, इस प्रकार के द्वन्द्वों से मुक्त हुए योगी के लिए धर्म कहाँ है, या काम कहाँ है, और अर्थ कहाँ है तथा ज्ञान कहाँ है?।"

आध्यात्मिक और व्यावहारिक समरसता

-**धर्मनारायण शर्मा,** विश्व हिन्दू परिषद-नई दिल्ली

कोई प्राचीन राष्ट्र जब प्राचीनता को प्राप्त होता है तो कुछ अच्छी और कुछ विकृत परिपाटियाँ घर कर लेती हैं। विकृत व्यवहार कृतियाँ समाज में दूरियाँ निर्माण करती हैं। इन विकृत परिपाटियों के कारण ही समाज में छोटे-बड़े का भेदभाव यहाँ तक कि छूत-अछूत जैसी घिनौनी व्यवहार कृतियाँ चल पड़ती हैं। आज अपने देश भारत में विशेषकर हिन्दू समाज में विषमता का बाजार गरम है।

वैदिक काल में या वेदों में भेद और छूआछूत का वर्णन नहीं है। वेदों में तो सब में एकात्मता का ही भाव हैं सभी मनुष्य विराटपुरुष के ही अंगोपांग कहे गये हैं। उपनिषदों में भी सर्वत्र आत्मा की ही प्रधानता हैं गीता भी समदर्शन का प्रतिपादन कर रही है।

यथा-

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम्।
विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति।।

जो पुरुष नष्ट होते हुए सब चराचर भूतों में परमेश्वर को नाशरहित और समभाव से स्थित देखता है, वही यथार्थ देखता है। ।।अध्याय 13/27।।

समं पश्यन्हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम्।
न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम्।।

क्योंकि जो पुरुष सबमें समभाव से स्थित परमेश्वर को समान देखता हुआ अपने द्वारा अपने को नष्ट नहीं करता, इससे वह परम गति को प्राप्त होता है।

।।अध्याय 13/28।।

विद्याविनयसमन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिता समदर्शिनः।।

वे ज्ञानीजन विद्या विनययुक्त ब्राह्मण में तथा गौ, हाथी कुत्ते और चाण्डाल में भी समदर्शी ही होते है।

।।अध्याय 05/18।। ।।32।।

सिद्धान्तः शास्त्र में **'आत्मवत सर्वभूतेषु'** कहा है। तुलसीदास जी ने भी उपर्युक्त बातों को निम्न प्रकार से व्यक्त किया है-

सीयराम मय सब जगजानि।
करहूँ प्रणाम जोरी जुगपानी।।

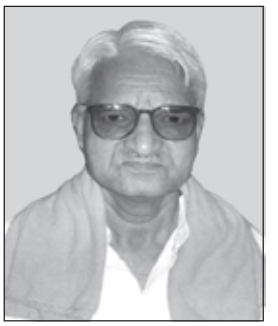

शास्त्रों ने इस प्रकार का ज्ञान बार-बार जगाया है फिर भी हिन्दू समाज विकृतियों का शिकार होकर भेददृष्टि वाला बन गया। बुद्धिमान समाज गिरे हुओं को उठाता है परन्तु भटका हुआ समाज भेद द्वारा समाज को दुर्बल बनाता है। समय की मांग तो समाज को जोड़ने की है। परन्तु समाज के अग्रगण्य महानुभावों व कुछ कट्टरपंथी सन्तों ने भेद को बढ़ाने का ही कार्य किया है। इस कारण बड़े प्रयत्नों के पश्चात भी समरसता, एकता संभव नहीं हो रही है।

इन अग्रगण्यों में मुख्यरूप से राजनेता व राजनीतिक दल है। आज की राजनीति मनुष्य के अन्दर शैतान को जगा रही है। अपने स्वार्थ की पूर्ती करने के लिये राजनेता गरीबों-दलितों को भड़काकर आन्दोलन करवाते हैं। दलितों के द्वारा राष्ट्रीय सम्पदा को आग लगवाते है, ऐसे राजनेताओं का एक ही उद्देश्य है येनकेन प्रकारेण सत्ता प्राप्त करना। एक दो राजनीतिक दलों ने लम्बे काल तक सत्ता की चासनी चाटने का कार्य किया है परन्तु समाज में एकता, समरसता के स्थान पर भेद एवं तुच्छाकांक्षा जगाने का ही कार्य किया। मूल बात यह है कि वे नहीं चाहते थे कि समाज में एकता-समरसता निर्माण हो। वे जानते है कि किसी दिन समाज समरस हो गया तो हमारे हलवे-मण्डे समाप्त हो जायेंगे। उनका व्यवहार गरीब को गरीब व दलित को दलित बनाये रखने का ही रहा है। इन्हें भारत के शास्त्रों की एकत्व सीख से लाभ नहीं है इस कारण कभी भी वे शास्त्रीय बात बोलने को तैयार नहीं है।

एकता-समरसता दोहरी नीति व दोहरी धाराओं द्वारा कभी भी स्थापित नहीं हो सकती। एकता संवेदनशील हृदयों द्वारा ही निर्माण होती है। दुःख तो तब होता है जब बड़े-बड़े आचार्यों द्वारा शास्त्रों को तोड़ा-मरोड़ा जाता है। ये विराट पुरुष के विराट का वर्णन लच्छेदार भाषा में

करेंगे और दूसरी ओर विराटपुरुष में जो भी विद्यमान हैं उसमें से कुछ को हेय बतायेंगे, वह हेय कैसे हो सकता है? चातुर्वर्ण में चरणों को शूद्र की संज्ञा दी है। विराट पुरुष के सभी अंग दर्शनीय, पूजनीय, वन्दनीय है। विभिन्न स्तोत्रों, दोहो, चौपाइयों में जैसे उनके मुखारविन्द की वन्दना विद्यमान है उससे भी अधिक उनके चरणों का गुणगान है। मंदिर में सभी का मस्तक भगवान के चरणों में झुकता है चाहे वह सत्ताधीश हो या कोई दीन-दलित ही क्यों न हो। हमारे कुछ विद्वान सन्त कभी-कभी ऐसा बोलते है कि भगवान के मंदिर में जूता खोलकर जाना होता है उसी प्रकार शूद्रों को मंदिर के केवल शिखर के दर्शन से ही पुण्य प्राप्त हो जायेगा। उनके कहने का अभिप्राय यही है कि शूद्रो को मंदिर में नहीं जाना चाहिए। वे भगवान द्वारा निर्मित चातुर्वर्ण को या तो नकार रहे है या विराट पुरुष के किसी अंग को अपवित्र मान रहे हैं।

भारत के अनेक सन्तों ने कट्टरवादियों की भेदवृत्ति को नकार कर सर्वत्र समरसता का ही प्रतिपादन किया है। सन्त रविदास जी ने तो 'हरि को भजे सो हरि का होही' कहकर सभी भक्तों को चाहे वह किसी भी बिरादरी का क्यों न हो उसे हरि का ही माना है। कुछ सन्तों ने तो कहा कि 'जाति न पूछो साधू की, पूछ लीजिये ज्ञान यह कहकर जाति वर्ण को नकार दिया हैं गुरु नानकदेव ने कहा कि "गुरु कृपाजिण नर पर किन्ही, तिन्ही जुगति पिछाणी" चाहे व किसी भी वर्ण का क्यों न हो 'नानक लीन भये गोविन्द में जों पानी संग पानी'।

भगवान श्रीराम ने जटायू का अन्तिम संस्कार किया। वानर अर्थात् वन में रहने वाले नर अर्थात् जनजाति बन्धुओं को श्रीराम ने गले लगाया। शबरी के बेर खाये, एक प्रकार से भगवान श्रीराम ने सबमें अपना रूप दर्शन कर सभी को प्रेम व सम्मान दिया था। जब अवतारी श्रीराम ऐसा उदार एवं प्रेम व सम्मान पूर्ण व्यवहार करते रहे तो आज के आचार्य शास्त्रों के नाम पर भारत की एकता समरसता में भेद क्यों चाहते हैं?

आज के स्वार्थी विघटन वादी, जातिवादी व श्रेष्ठता का दम्भ धारण करने वाले आँख खोलकर देख लें। यह काल इतना शक्तिवान है कि जो कोई भी इसके मार्ग में रोड़ा बनने का प्रयत्न करेगा, वे पेड़ के पत्तों की तरह उड़ जायेंगे। समरसता यह इस देश की अनिवार्यता है, जैसे पृथ्वी घुमती है, गृहमण्डल भी भगवत् योजना से संचरित हो रहे हैं। वैसे ही सामाजिक समरसता का प्रवाह भी तेजी के साथ चल रहा है। इसे अब राजनेता व कट्टरवादी नहीं रोक सकेंगे। काल एकता, एकात्मता, समरसता निर्माण करके ही मानेगा। समय की मांग है कि सम्पूर्ण समाज अपने पिछड़े दलित बन्धुओं को गले लगावे और सब प्रकार का सम्मान देवें। उनकी बस्ती में जावें उनके कष्टों को ध्यान में रखकर उन्हें दूर करने का प्रयास करें। कई बार उनकी बस्ती में पण्डित कर्मकाण्ड करने के लिये नहीं जाते है हमारा धर्म है कि हम यह प्रबन्ध भी करें। बस्ती में सड़क, पानी का प्रबन्ध ठीक नहीं है तो सम्बन्धित विभाग से मिलकर सुविधा निर्माण करना चाहिए। कार्यक्रमों में भी सम्मानित स्थान दलितों को देने में पहल करने की आवश्यकता है। विभिन्न प्रकार के संगठनों में भी इन्हें उचित स्थान देने का स्वभाव बनना चाहिए। दलितों की बस्तियों में संस्कार केन्द्र, सिलाई बुनाई केन्द्र आरम्भ करें और हो सके तो विद्यालय, छात्रावास, कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्रों का संचालन कर उनकी नव पीढ़ी को सक्षम बनाने का कर्तव्य समाज पूर्ण करें क्योंकि हम सभी एक माँ की सन्तान है उस माँ का नाम है भारत माता। इसी बात को ध्यान में रखकर विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित धर्म संसद में सन्तों ने घोषणा की थी-

हिन्दवः सोदरा सर्वे, न हिन्दू पतितो भवेत।
मम दीक्षा हिन्दू रक्षा, मम मंत्र समानता।।

हिन्दू-हिन्दू भाई-भाई हैं, कोई हिन्दू पतित नहीं है। रामनाम तो पतित को पावन करता है इसके अलावा भारत में गंगा, यमुना के समान अनेक पावन नदिया बह रही है। गंगा के नामोच्चार से पापो का क्षय हो जाता है ऐसी पावन भारत की भूमि में कोई पतित हो नहीं सकता। इसलिये अब सर्वत्र एकता का, समानता का नाद गुंजयमान हो ओर राष्ट्रीय एकता को सशक्त किया जाय। दलित समाज टुच्चे राजनेताओं का साथ छोड़कर देशभक्ति का बाना धारण करें और अपने भारत को शीघ्रातिशीघ्र जगद्गुरु बनावें। ❑

अंदाज ऐसा कि तलवार भी धार का नुस्खा पूछे

-विनोद बब्बर

पिछले दिनों एक श्रद्धांजलि सभा में जाना पड़ा। युवा मृत्यु के कारण अनेक लोग परिवार को सांत्वना देने के लिए आये थे। सभागार पूरी तरह भरा था। कैंसर के दैत्य ने युवा को असमय छीना था। परिवार ने अपनी हैसियत से बढ़कर संघर्ष किया। महंगे और लंबे उपचार के बीच वह युवा परिवार को छोड़कर चला गया। किसी युवा का जाना उसके परिजनों, निकट संबंधियों और उसके मित्रों के लिए ही नहीं, पूरे समाज की बहुत बड़ी क्षति हैं। स्वाभाविक है सबको बहुत कष्ट होता है। एक सामाजिक मित्र मुझे भी उस कार्यक्रम में ले गये।

कोई श्रद्धांजलि सभा किसी परिवार को उसके प्रियजन से विछोह को सहने की प्रार्थना सभा है। सभी उपस्थित अपने-अपने ढंग से परिवार को ढांढस दिलाने का प्रयास करते हैं। विद्वान वक्ता पंचभौतिक शरीर की नश्वरता और आत्मा की अमरता पर गीता के कुछ श्लोकों की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। तो कुछ अन्य ग्रन्थों को उद्धृत करते हैं। अपने-अपने विश्वास के अनुसार भजन, संकीर्तन, गुरुवाणी आदि भी प्रस्तुत किये जाते हैं तो केवल इसीलिए कि शोक संतप्त परिवार उत्पन्न परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालने का प्रयास करें। इधर कुछ विशिष्ट वक्ताओं, नेताओं आदि की उपस्थिति और उनके द्वारा दिवंगत व्यक्तित्व के बारे में कुछ कहने का प्रचलन बढ़ा है। जाहिर है जाने वाले के चरित्र के उज्ज्वल पक्षों की जानकारी दी जाती है ताकि वहाँ उपस्थित लोग भी उससे प्रेरणा ले सके। ऐसा करना उचित भी है। कई बार प्रशंसा का अतिरेक भी हो जाता है लेकिन तक बहुत अटपटा लगता है जब किसी अनजान व्यक्ति पर गुण जबरदस्ती रोपित किये जाते हैं। ऐसी-ऐसी बाते तक कह दी जाती है जिनका जाने वाले से कोई संबंध न होता।

उपरोक्त श्रद्धांजलि सभा में भी संत प्रवचन के पश्चात् अनेक वक्ताओं ने श्रद्धांजलि दी। भावनाओं का सागर उमड़ने लगा। लगा जैसे होड़ हो रही हो ज्यादा से ज्यादा प्रशंसा करने की। एक विद्वान वक्ता ने थोड़ी साफगोई से काम लेते हुए कहा, 'मुझे दिवंगत युवा से मिलने का अवसर तो नहीं मिला। लेकिन सब कह रहे हैं कि वे जरूर योग्य, प्रतिभाशाली, समाजसेवी, फलां संस्था के समर्पित कार्यकर्ता थे। उन्होंने अपने छोटे से जीवन में अनेक कीर्तिमान स्थापित किये। बहुत

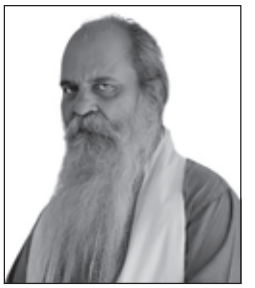

बहादुरी से कैंसर जैसे भयंकर रोग से संघर्ष किया। उनका असमय जाना न केवल इस परिवार के लिए बल्कि मेरे लिए भी अपूर्णीय क्षति है। ईश्वर उन्हें मोक्षोमोक्ष गति प्रदान करें। ओम शान्ति!'

पूर्व निर्धारित समय समाप्ति की ओर था कि मंच से अंतिम वक्ता के रूप में मेरा नाम पुकारा गया। भारी मन से माइक तक पहुँच कर अपनी आदत के अनुरूप कठोर शब्दों से शुरुआत की, 'दिवंगत के असमय जाना निश्चित रूप से दुखद है परंतु उससे भी दुखद है उनके असमय देहावसान से हमारे द्वारा उससे कोई सामाजिक संदेश न ग्रहण करना। पिछले दिनों एक सेमिनार में दिन भर विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों पर व्याख्यान सुनने का अवसर मिला। सभी ने चिकित्सा विज्ञान की आधुनिकतम खोजों की जानकारी देते हुए जीवन को दीर्घ आर स्वस्थ बनाने का दावा किया। वहाँ मुझे भी कुछ कहने के लिए खड़ा किया गया तो मैंने सीधे-स्पष्ट कहा, 'आपके दावें सही हैं या गलत आप जाने परंतु क्या आप इस बात से इंकार कर सकते हैं कि मृत्यु लगातार कष्टकारी होती जा रही है। लोग महीनों, वर्षों डायलसिस, वेन्टिलेटर पर लटके रहते हैं। आज घर पर शांति से अंतिम सांस लेने के अवसर लगभग समाप्त हो रहे हैं। आपको क्या कहना है।' उनके प्रवक्ता ने उत्तर दिया, 'ऐसी बातों पर चिंतन हमारी नहीं समाज की समस्या है।' यहाँ तथा अन्य स्थानों पर देखता हूँ कि समाज के पास भी ऐसी बातों पर विचार के लिए समय नहीं। क्या दिवंगत को यह सच्ची श्रद्धांजलि नहीं होगी कि हम विचार करें कि कैंसर, गुर्दे में खराबी, हृदय जैसे रोगो में तेजी से वृद्धि क्यों हो रही

है? क्या यह सत्य नहीं कि तेजी से बढ़ते प्रदूषण, खानपान की गलत आदतों, बदलती जीवन शैली ने हमें यह उपहार दिया हैं? प्रदूषण से निपटने के लिए पेड़ पौधे बढ़ने चाहिए लेकिन हम तेजी से घटाने में लगे हैं। यज्ञ से वातावरण शुद्धि होती है लेकिन हम उससे दूर जा रहे हैं। नई पीढ़ी के पास समय नहीं या हम ही उसे ऐसे कामों से जोड़ना नहीं चाहते, यह विचारणीय है। वे चाउमीन, पिज्जा, मोमोस आदि आदि खाते हैं जिसमें स्वाद के लिए अनेक रसायन मिलाये जाते हैं। छाछ, शर्बत, कांजी, जलजीरा, ठण्डाई, नींबूपानी, पानी के बदले 'टायलेट-क्लीनर' को पसंद किया जा रहा है। ऐसे में अगर हम सोचते हैं कि यह किसी युवा की अंतिम शोकसभा है तो हम अपने आपको धोखा दे रहे हैं। जरूरत है जागने की। अगर हम उस युवा को वास्तव में ही श्रद्धांजलि देने आये हैं तो आओ संकल्प करें-प्रकृति से जुड़ने का। भारतीय खानपान को न त्यागने का। शव पर चादरे चढ़ाने की बजाय हवन सामग्री चढ़ाने का। अपनी अगली पीढ़ी को संस्कारों से जोड़ने का। अंत में परमपिता परमात्मा से प्रार्थना कि वह हमें इतना विवेक दे कि हम श्रद्धांजलि की औपचारिकता नहीं, व्यवहारिकता को समझ सकें।'

लौटते हुए मित्र ने कहा, 'तेरा अंदाज-ए-बयां इतना तीखा कि तलवार भी धार का नुस्खा पूछे!'

संपर्क- ए-2/9ए, हस्तसाल रोड,
उत्तम नगर नई दिल्ली-110059
09868211911, 7892170421
rashtrakinkar@gmail.com

❑

क्रूर राजा

एक अत्यंत निर्दयी और क्रूर राजा था उसे दूसरों को कष्ट देने में आनंद आता था उसका आदेश था कि उसके राज्य में एक या दो लोगों को प्रतिमाह फांसी लगनी ही चाहिए। राजा से उसकी प्रजा बहुत पीड़ित हो चुकी थी। एक दिन उस राजा के राज्य में कुछ वरिष्ठजन इस समस्या को लेकर एक संत के पास पहुँचे और बोले-महाराज! हमारी रक्षा करो, यदि राजा का यह क्रम जारी रहा तो सारा नगर ही रिक्त हो जाएगा। संत भी बहुत दिनों से यह सब देख-सुन रहे थे। वह अगले दिन राजा के दरबार में जा पहुँचे। राजा ने उनका स्वागत किया और उनके आने का कारण पूछा।

संत बोले-राजन में आपसे एक प्रश्न करने आया हूँ-यदि आप शिकार खेलने जंगल में जाए और मार्ग भूलकर भटकने लगें और प्यास के मारे आपके प्राण निकलने लगें ऐसे में कोई व्यक्ति सड़ा गला पानी लेकर आपको इस शर्त पर पिलाये कि तुम अपना आधा राज्य उसे दोगे तो क्या आप वैसा ही करोगे। राजा ने कहा-अपने प्राणों की रक्षा के लिए आधा राज्य तब देना ही होगा। संत पुनः बोले-यदि वह गन्दा पानी पीकर आप बीमार हो जाओ और प्राणों पर संकट आ जाये तब कोई वैद्य तुम्हारे प्राण बचाने के लिए आपका शेष राज्य भी मांग ले तो तुम क्या करोगे। राजा ने तत्काल उत्तर दिया-मैं उसे अपना शेष राज्य भी दे दूँगा, जब प्राण ही नहीं तो कैसा राज्य?

तब संत बोले-स्वयं की प्राणों की रक्षा के लिए तो राज्य लुटा सकते हो तो फिर दूसरों के प्राण क्यों लेते हो। संत के ये वचन सुनकर राजा को चेतना आ गई और वह तत्काल सुधर गया और अब लोकहित के कार्य करने लगा।

वेदों को मानने वाले ही धर्माधर्म के जानने तथा धर्म के आचरण और अधर्म के त्याग से सुखी होने को समर्थ होते हैं।

-स्वामी दयानन्द

विलासिता का दमन, आत्मसंयम, नियम निष्ठा, गुरु जनों के प्रति भक्ति, यह सब हमारे देश के प्राचीन आदर्श हैं।

-रवीन्द्र नाथ टैगोर

कांग्रेस अपने गिरेबां में भी तो झांके

- लोकेन्द्र सिंह

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह सहित कांग्रेस के दूसरे नेताओं ने राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को चिठ्ठी लिखकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की भाषण-शैली पर आपत्ति दर्ज कराई है। कर्नाटक के हुबली में दिए गए भाषण को आधार बनाकर पत्र में उन्होंने राष्ट्रपति से आग्रह किया है कि वह प्रधानमंत्री को कांग्रेस नेताओं या अन्य किसी पार्टी के लोगों के खिलाफ अवांछित और धमकाने वाली भाषा का इस्तेमाल करने से रोकें। इसके साथ ही डॉ. मनमोहन सिंह और अन्य नेताओं ने आरोप लगाया कि नरेंद्र मोदी का व्यवहार प्रधानमंत्री पद की मर्यादा के अनुकूल नहीं है। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह लोकतांत्रिक व्यवस्था में भाषा की मर्यादा और संयम पर चिंतित हो रहे हैं, यह अच्छी बात है। राजनेताओं को अपने प्रतिद्वंद्वी नेताओं के प्रति मर्यादित भाषा का उपयोग करना चाहिए। देश का सामान्य व्यक्ति भी यही मानता है और चाहता है कि हमारे नेता भाषा में संयम बनाएं। किंतु, विचार करने की बात यह है कि पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह और कांग्रेसी नेताओं को अब जाकर यह चिंता हुई है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की भाषण-शैली पर आपत्ति दर्ज कराने वाले पूर्व प्रधानमंत्री और कांग्रेसी नेता क्या अपने वक्तव्यों के लिए खेद प्रकट करेंगे? कांग्रेस ने नरेन्द्र मोदी के विरुद्ध जिस प्रकार के अपशब्दों को उपयोग किया है, क्या उन सबके लिए मनमोहन सिंह खेद प्रकट करेंगे?

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इतना ही तो कहा है कि 'कांग्रेस के नेता कान खोल करके सुन लीजिए, अगर सीमाओं को पार करोगे, तो ये मोदी है, लेने के देने पड़ जाएंगे...।' पूर्व प्रधानमंत्री को यह धमकी इतनी बेचैन कर गई कि उन्होंने राष्ट्रपति को चिठ्ठी लिख दी, कांग्रेसी नेताओं के हस्ताक्षर करा लिए और कांग्रेस नेताओं ने पत्र को ट्वीट कर इस विमर्श को सार्वजनिक कर दिया। जिस तरह से कांग्रेसी नेता व्यवहार और भाषा की सीमा लांघ रहे हैं, उस हिसाब से तो इसे एक सामान्य चेतावनी ही मानना चाहिए। संवैधानिक पद की गरिमा की दुहाई देने वाले पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को नरेन्द्र मोदी पर अंगुली उठाने से पहले कांग्रेस के गिरेबां में झांक कर देख लेना चाहिए था। कांग्रेस के नेताओं ने स्वयं संवैधानिक पदों की गरिमा का कितना ध्यान रखा है और संवैधानिक पद (गुजरात के मुख्यमंत्री और भारत के प्रधानमंत्री) पर बैठे एक व्यक्ति के प्रति किस स्तर की भाषा का उपयोग किया है, यह किसी से छिपा नहीं है।

नरेन्द्र मोदी जब गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तब कांग्रेस की अध्यक्ष सोनिया गांधी ने उन्हें 'मौत का सौदागर' कहा, बाद में उनके उत्तराधिकारी और वर्तमान कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने भारत के प्रधानमंत्री को 'खून का दलाल' कहा। डॉ. मनमोहन सिंह की सरकार में मंत्री रहे मणिशंकर अय्यर और राहुल गांधी की बहन प्रियंका ने प्रधानमंत्री मोदी को 'नीच' कहा। संप्रग सरकार में मंत्री पद पर रहते हुए जयराम रमेश ने मोदी को 'भस्मासुर', बेनी प्रसाद वर्मा ने 'पागल कुत्ता', सलमान खुर्शीद ने 'बंदर' कहा, तो कांग्रेसी नेता राशिद अल्वी ने मोदी को 'मोस्ट स्टूपिड प्रधानमंत्री' बताया। कांग्रेस के एक प्रत्याशी ने तो नरेन्द्र मोदी के टुकड़े-टुकड़े करने की धमकी तक दे दी। खुलकर किसी के टुकड़े करने की बात कहना क्या धमकी नहीं है? कांग्रेस नेता के इस बयान पर तो उनके विरुद्ध जानलेवा धमकी देने का मामला दर्ज होना चाहिए था। क्या डॉ. मनमोहन सिंह ने अपने उस नेता के लिए पार्टी अध्यक्ष को ही चिठ्ठी लिखी? संप्रग सरकार में केंद्रीय मंत्री रहे मनीष तिवारी और मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री रहे दिग्विजय सिंह ने तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लिए गाली ही ट्वीट कर दी थी।

देश के एक लोकप्रिय मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री के लिए कांग्रेस के नेता और संवैधानिक पदों पर बैठे लोग यह सब कहते रहे, लेकिन कभी भी डॉ. मनमोहन सिंह

ने अपना मौन नहीं तोड़ा। अब जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'अदब' से रहने का इशारा क्या कर दिया, पूर्व प्रधानमंत्री वाचाल हो उठे। उन्हें संवैधानिक पद की गरिमा ध्यान आने लगी। डॉ. मनमोहन सिंह तो उस समय भी चुप बैठे रहे, जब नरेन्द्र मोदी का वीजा रोकने के लिए कांग्रेस और कम्युनिस्ट नेता एक चिठ्ठी लेकर अमेरिका दौड़े थे। उस दिन सिर्फ संवैधानिक पद की ही गरिमा तार-तार नहीं हुई थी, अपितु देश की प्रतिष्ठा भी धूमिल हो गई थी।

बहरहाल, अभी बात सिर्फ भाषा की मर्यादा तक ही सीमित रखनी चाहिए। जिस समय पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह भाषा पर चिंता जताते हुए राष्ट्रपति को चिठ्ठी लिख रहे हैं, उसी समय मध्यप्रदेश में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता माणक अग्रवाल मर्यादा की फुटबॉल बनाकर लात मार रहे हैं। माणक अग्रवाल ने भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लोगों पर ही आपत्तिजनक टिप्पणी नहीं की है, बल्कि अग्रवाल ने भारत की 'ब्रह्मचर्य' साधना को लांछित करने का प्रयास किया है। माणक अग्रवाल जब यह कह रहे थे कि भाजपा और संघ के लोग शादी नहीं करते, इसलिए बलात्कार करते हैं, तब वह भूल गए कि देश में 'ब्रह्मचर्य' का पालन करने वाले महापुरुषों की महान परंपरा भी है। वह यह भी भूल गए कि उनकी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गाँधी ने भी अभी तक विवाह नहीं किया है। बहरहाल, पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और कांग्रेसी नेता यह भूल गए कि वह जिस व्यक्ति के भाषण पर आपत्ति दर्ज करा रहे हैं, उसे कांग्रेस की ओर से कितनी गालियों और कितने प्रकार के अपशब्दों से संबोधित किया गया है। वह यह भूल गए कि इस मामले में कांग्रेस का दामन बहुत काला है। अब जब पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने बोलने लगे हैं, तो उन्हें अब पहले अपने आंगन की सफाई करनी चाहिए। जब तक वह अपना घर साफ नहीं कर लेते, उन्हें किसी और पर अंगुली नहीं उठानी चाहिए। कम से कम उस व्यक्ति पर तो कतई नहीं, जिसके लिए कांग्रेसी नेताओं ने नये-नये अपशब्दों की खोज की हो।

(लेखक विश्व संवाद केंद्र, भोपाल के कार्यकारी निदेशक हैं।) ❑

एन.जी.टी. को सुप्रीम कोर्ट ने फटकार लगाई
(मस्जिदों की अजान से ध्वनि प्रदूषण का मामला)

अखण्ड भारत मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संदीप आहूजा द्वारा वरिष्ठ अधिवक्ता श्री राहुलराज मलिक के माध्यम से एक याचिका मस्जिदों की अजान से होने वाले ध्वनि प्रदूषण के खिलाफ सर्वोच्च न्यायालय के महामहिम न्यायधीश श्री ऐ.के.सीकरी की अध्यक्षता वाली डबल बेंच की पीठ मे दाखिल की। महामहिम न्यायधीशों की पीठ ने सुनवाई करते हुऐ एन.जी.टी. को फटकार लगाते हुऐ कहा कि सम्बधित विभाग एवं दिल्ली सरकार इन मस्जिदों की गहन जाँच करके इस ध्वनि प्रदूषण को शीघ्र बन्द करवाये का प्रबन्ध सुनिश्चित करे। एन.जी.टी. के कार्यवाही न करवाने पर माननीय सुप्रीम कोर्ट ने अपनी नराजगी जाहिर की है।

इस विषय में अखण्ड भारत मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संदीप आहूजा ने जानकारी देते हुए कहा कि पूर्वी दिल्ली के सात मस्जिदों के खिलाफ सबूत एकत्र करके केस को तीन साल एन.जी.टी. कोर्ट मे लड़ा गया था जिसमे दिल्ली सरकार एवं डी.पी.सी.सी. को इन मस्जिदों की जाँच करके दोषी लोगों को दण्ड देने का निर्देश दिया गया था। जिसका अनुपालन नही हुआ हमें मजबूरी में सर्वोच्च न्यायालय जाना पड़ा। श्री आहूजा ने अफसोस जाहिर करते हुऐ कहा कि एन.जी.टी. अपने आप में प्रभावशाली न्यायालय है मगर इस प्रकार वर्ग विशेष को छुट देना ठीक नही है। श्री आहूजा ने दिल्ली सरकार एवं डी.पी.सी.सी. के खिलाफ सख्त कार्यवाही की माँग की है।

प्रेषक : **राजश्री आहूजा**
(प्रचारमंत्री)

❑

जल्दी गुस्सा करना जल्द ही आपको मूर्ख साबित कर देगा।

श्री अश्विनी उपाध्याय जी भारतीय मतदाता संगठन के संगठन प्रमुख बने

नई दिल्ली। शनिवार, 12 मई, 2018 को भारतीय मतदाता संगठन की कार्यकारिणी ने संगठन की बढ़ती हुई जरुरतों को ध्यान में रखते हुए युवा श्री अश्विनी उपाध्याय जी को संगठन प्रमुख पद का भार दिया। संगठन के संस्थापक अध्यक्ष श्री रिखब चन्द जी जैन (75वर्ष) की बढ़ती हुई आयु की वजह से संगठन में समय की आवश्यकता और गतिविधियों में बढ़ाव नहीं हो पा रहा था। श्री जैन ने अपना व्यक्तिगत विचार रखा कि भारतीय मतदाता संगठन के लिए वर्तमान और भविष्य में बहुत बड़ा विस्तृत कार्य करने की आवश्यकता होगी। इसलिए उनका सोचना था कि यह उचित होगा कि उनके बाद भी संगठन मजबूती के साथ आगे बढ़ता रहे। इसलिए उन्होंने अश्विनी जी का चयन कर अपना पद भार कार्यकारिणी की सर्वसम्मति से अश्विनी जी को दिया। अब श्री अश्विनी उपाध्याय संगठन की कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष होगें जबकि श्री जैन भारतीय मतदाता संगठन के ट्रस्ट मंडल के अध्यक्ष बने रहेगें।

लोकतन्त्र की गुणवत्ता में बराबर गिरावट, आपराधिकतत्त्व का बढ़ता हुआ राजनीति में प्रभुत्व, धनबल - बाहुबल का चुनाव में नंगा नाच, आदर्शों की तिलांजलि देकर सभी पार्टियाँ आपराधिक लोगों के कंधों पर चलना चाहती है। जो कुछ बंगाल में हुआ, लोकतन्त्र की हत्या से कम नहीं। हाई कोर्ट के बार-बार हस्तक्षेप, चुनाव दोबारा करवाने के बावजूद हिंसा होती रही, ममता देखती रही। मतदाताओं को वोट देने नहीं दिया गया। प्रत्याशियों को नामांकन भरने नहीं दिया गया। क्या यहीं लोकतन्त्र हैं? भविष्य की पीढ़ियाँ कभी ऐसे नेताओं को माफ़ नहीं करेगी। लोकतन्त्र का अपहरण हुआ और मतदाताओं का अपमान हुआ।

प्राप्त जानकारियों के अनुसार कर्नाटक चुनाव हिन्दुस्तान के अब तक के सभी चुनावों से अधिकतम महंगा रहा है। कूटनीति ने फ्रैन्डली मैच की जगह ले ली। शपथ लेने से पहले विधायक खरीदे और बेचे जाने लगें। निर्धारित सीमा से अनेक गुणा खर्च को देखते हुए तो चुनाव आयोग प्रत्येक चुने हुए विधायक की सदस्यता निरस्त करवा सकता है। अरबों रुपये नकद पकड़ें गए, शराब पकड़ी गई, लालच देने के लिए मुफ्त उपहारों और वादों की झड़ी लगी, ऊँच-नीच व्यक्तिगत स्तर पर नेताओं ने चुनाव प्रचार में लेन-देन की, यह लोकतन्त्र का उपहास है। कोई भी मतदाता ऐसा चुनाव और ऐसा लोकतन्त्र नहीं चाहता है। एक तरह से कर्नाटक चुनाव में मतदाताओं ने तो तीनों पार्टियों को ही खारिज कर दिया।

आपराधिक तत्त्व और स्वार्थी तत्त्व भारतीय राजनीति में और हावी हो उससे पहले पार्टियों पर लगाम लगानी जरुरी है। उन्हें रेगुलेट करना जरुरी है। पार्टीतन्त्र, राजतन्त्र और लोकतन्त्र एवं प्रशासन में सुधार बहुत समय से ओवर ड्यू है। अभी कुछ नहीं किया गया तो पाकिस्तान और अफगानिस्तान की तरह भारत भी एक आतंकवादियों और अपराधियों द्वारा शासित देश हो जायेगा। भारतीय मतदाताओं और जनता को ऐसे दलदल से निकलने में फिर सैंकड़ों वर्ष लग सकते हैं।

विकास हो रहा है। विकास को गति भी मिल रही है लेकिन विकास की गति से भी तेज गति से भारत में अपराध बढ़ रहा है। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ तो ठीक है लेकिन बेटियाँ जब पढ़ने जाती है तो दुष्कर्म की शिकार हो रही हैं। अध्यापक, प्रोफेसर ही दुष्कर्मी हो गये। छोटी बच्चियाँ ही नहीं, समझदार ग्रेजुएट लड़कियाँ भी महाविद्यालयों और विद्यालयों में दुष्कर्म की शिकार हो रही हैं। लड़कियाँ अपने माँ या बाप या रिश्तेदारों से भी खतरे में रहती है। अपराध का ग्राफ बढ़ता जा रहा है।

जब तक राजनीति और राजनैतिक पार्टियाँ अपराधमुक्त नहीं होगी भारत कभी भी अपराधमुक्त नहीं हो सकता है।

न ही सुशासन आ सकता है। चार साल पहले भाजपा सरकार आने पर लगा कि सिद्धान्त पर चलने वाली पार्टी अवश्य अपनी घोषणाओं और आदर्शों के अनुसार भारत को अपराधमुक्त करेगी। राजनीति में शुचिता आयेगी। भारत ''कांग्रेस मुक्त'' हो या ना हो लेकिन ''अपराधमुक्त'' होना ही चाहिए। लेकिन चार वर्षों के दौरान हुए चुनाव प्रक्रियाओं से और चुनाव में खड़े हुए प्रत्याशियों की अकूत सम्पदा और उसमें पाँच वर्षों में अनेक गुणा अप्रत्याशित वृद्धि तथा प्रत्याशियों के स्वयं द्वारा घोषित अपराधों के उल्लेख में बढ़ोत्तरी यह सब दर्शाता है कि अपराधमुक्त करने वाली पार्टी स्वयं अपराधियों के कंधे पर चलना चाह रही है। अपराधी लोगों का पार्टी में प्रेवश और उन्हें प्रत्याशी बनने एवं बनाने में तथा मंत्री बनाने में कोई हिचक नहीं है। उदाहरण के लिए कर्नाटक में भाजपा के अपराधी प्रत्याशियों की संख्या 26 प्रतिशत और कांग्रेस में 15 प्रतिशत हैं। यह सब चौंकाने वाली बात है। क्या सत्ता को हासिल करने के लिए अपराधियों का सहारा लेना चाहिए? उसका आखिरी अंजाम क्या होगा? पश्चिम बंगाल में गुंड़ागर्दी से सत्ता हासिल की जा रही है और सत्ता स्थानांतरण के लिए भी गुंडों एवं अपराधी लोगों का सहारा ले रहे हैं। केरल में भी ऐसी ही स्थिति है। तमिलनाडू में पैसे के बल पर चुनावी खेल हो रहा है। राजनीतिक पार्टियाँ अपने दलहित को छोड़कर राष्ट्रहित में कब काम करेगी? भ्रष्टाचार में कहीं कमी नहीं दिख रही है? जिस पार्टी से राजनीतिक शुचिता और निरअपराधिकरण की उम्मीद थी उनसे अब ऐसी उम्मीद करना सही नहीं होगा। ऐसे में आवश्यकता है कि प्रबुद्धजन नागरिक, मीडिया अपनी नींद तोड़कर जागृत हो और समय रहते कुछ करें। बढ़ते हुए अपराधिकरण का घड़ा जब भर जायेगा शायद तब कुछ करना सम्भव ही नहीं होगा।

भारतीय मतदाता संगठन के लिए ऐसी परिस्थितियों में जिम्मेदारी और भी बढ़ गयी है। इस आंदोलन को ओर मजबूत करने और इसमें भाग लेने के लिए समर्पित योद्धाओं की आवश्यकता हैं। संगठन के सभी लोग इस संदर्भ में अधिक से अधिक समर्पित होगें और अधिक से अधिक लोगों को और पूरे देश को इस मुहिम में जोड़ेंगे। इस तरह के अभियान में लगे अन्य संस्थानों और व्यक्तिगत स्तर पर काम कर रहे संघर्षरत् लोगों को प्रोत्साहित करेगें। सभी एकजुट होकर ऐसी परिस्थितियों से निपटने का संकल्पबद्ध कार्यक्रम बनायें।

-विमल वधावन
महासचिव, भारतीय मतदाता संगठन
मो.: 9968357171

राष्ट्रीय ख्याति के अम्बिका प्रसाद दिव्य पुरस्कारों हेतु पुस्तकें आमंत्रित

भोपाल, साहित्य सदन भोपाल द्वारा विगत बीस वर्षों से दिये जाने वाले इक्कीसवें अम्बिका प्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कारों हेतु रचनाकारों से पुस्तकें आमंत्रित की जाती हैं।

दिव्य पुरस्कारों हेतु लेखकों एवं कवियों से - कहानी, उपन्यास, कविता, गजल, नवगीत साहित्य व्यंग्य, समालोचना एवं बाल साहित्य विषयों पर मौलिक कृतियाँ आमंत्रित की जाती हैं।

प्रत्येक विधा में इक्कीस सौ रुपये राशि के अम्बिका प्रसाद दिव्य स्मृति पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे।

गुणवत्ता के क्रम में द्वितीय स्थान पर आने वाली पुस्तकों को दिव्य प्रशस्ति पत्र प्रदान किये जायेंगे। प्रत्येक प्रविष्टि के साथ रुपये 200/- (दो सौ) प्रवेश शुल्क भेजना होगा। हिन्दी में प्रकाशित पुस्तकों की मुद्रण अवधि 1 जनवरी 2016 से 31 दिसम्बर 2018 के मध्य होना चाहिए। अन्य जानकारी हेतु मोबाइल नंबर 09977782777 तथा रंहकपीापदरंसा/हउंपसण्बवउ पर सम्पर्क किया जा सकता है। पता है - श्रीमती राजो किंजल्क, साहित्य सदन, 145-ए, सांईनाथ नगर, सी सेक्टर, कोलार रोड, भोपाल - 462042 (म.प्र) पुस्तकें भेजने की अंतिम तिथि है - 30 दिसम्बर 2018।

-जगदीश किंजल्क,
साहित्य सदन, 145 - ए , सांईनाथ नगर
सी सेक्टर , कोलार रोड, भोपाल - 462042
ईमेल - jagdishkinjalk@gmail.com

विहिप अध्यक्ष द्वारा हरिद्वार में माँ गंगा की पूजा-अर्चना

हरिद्वार: विश्व हिंदू परिषद के नवनिर्वाचित अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष विष्णु सदाशिव कोकजे ने धर्मनगरी हरिद्वार पहुँचकर माँ गंगा की पूजा-अर्चना की। वीएचपी के अध्यक्ष कोकजे के साथ कार्यकारी अध्यक्ष, महामंत्री और बीएचपी के अन्य कई पदाधिकारी भी मौजूद रहे।

अध्यक्ष विष्णु सदाशिव कोकजे ने अपनी बात की शुरुआत राम जन्मभूमि से ही की। उन्होंने कहा कि राम जन्मभूमि हिंदू समाज का संकल्प है। इसीलिए उन्होंने हरिद्वार पहुँचकर माँ गंगा से प्रार्थना की कि गंगा माँ उन्हें राम मंदिर बनाने के उद्देश्य में सफलता प्रदान करें। कोकजे ने कहा कि राम मंदिर का मामला न्यायालय में विचाराधीन है इसलिए केंद्र सरकार फिलहाल चाह कर भी कुछ नहीं कर सकती। हमें केंद्र सरकार पर किसी भी तरह की टीका-टिप्पणी नहीं करनी चाहिए बल्कि निर्णय का इंतजार करना चाहिए कि सुप्रीम कोर्ट का निर्णय हमारे पक्ष में आए।

वीएचपी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष सदाशिव कोकजे ने हरिद्वार स्थित शांतिकुंज प्रमुख डॉ. प्रणव पंड्या से मुलाकात के बाद हर की पौड़ी पहुँचकर पूजन किया इसके बाद दिन भर हरिद्वार में कई संतों और बीएचपी के कई कार्यकर्ताओं से मुलाकात की।

इस मौके पर उन्होंने मुहम्मद अली जिन्ना की तस्वीर को लेकर कहा कि जिन्ना को किसी भी पैमाने से राष्ट्रपुरुष नहीं माना जा सकता है और हिंदुस्तान में उसे सम्मान का स्थान नहीं मिलना चाहिए। इस विवाद पर उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्या ने भी बयान दिया था। उन्होंने कहा था कि पाकिस्तान का जनक मुहम्मद अली जिन्ना इस देश का दुश्मन था। इसके बाद पूर्व उप-राष्ट्रपति हामिद अंसारी ने भी प्रतिक्रिया दी थी। उन्होंने विश्वविद्यालय के परिसर में लगी जिन्ना की तस्वीर को लेकर हंगामा करने वालों बाहरी लोगों के खिलाफ कार्रवाई संबंधी छात्रों की मांग का समर्थन किया था। उन्होंने कहा था कि हंगामे का समय और इसे 'सही साबित करने के लिए गढ़े जा रहे तर्क' सवाल खड़े कर रहे हैं।

इस विवाद के बीच बहराइच से भाजपा सांसद सावित्री बाई फुले ने जिन्ना को महापुरुष करार देते हुए कहा था कि आजादी की लड़ाई में जिन्ना का योगदान था। इसलिए जिन्ना की तस्वीर को जहाँ भी लगाए जाने की जरूरत है उस जगह पर लगाई जानी चाहिए। आपको बता दें कि जिन्ना की तस्वीर को लेकर उठा विवाद तब उठा था जब अलीगढ़ से भाजपा सांसद सतीश गौतम ने इस मामले को उठाया था।

मुहम्मद अली 1938 में अलीगढ़ यूनिवर्सिटी आए थे। उन्हें यूनियन द्वारा कई अन्य लोगों की तरह मानद उपाधि दी गई थी। छात्रसंघ ने 1920 में आजीवन सदस्यता देने की शुरुआत की थी। तब महात्मा गाँधी और जिन्ना को भी सदस्यता मिली थी और तभी से वहाँ जिन्ना की तस्वीर लगाई गई थी।

साभार: इंटरनेट

विद्या सबसे अनमोल धन है। इसके आने मात्र से ही सिर्फ अपना ही नही अपितु पूरे समाज का कल्याण होता है।

-ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

कश्मीर में रमजान पर युद्ध-विराम

जिस कश्मीर में ''भारत काफिर है'' के नारे लगाए जाते हो वहाँ युद्ध-विराम का क्या औचित्य है? अनेक आपत्तियों के उपरांत भी केंद्रीय सरकार ने जम्मू-कश्मीर की मुख्यमन्त्री महबूबा मुफ्ती की मांग को मानते हुए रमजान माह (अवधि लगभग 30 दिन) में सेना को आतंकियों के विरोध में अपनी ओर से आगे बढ़ कर कोई कार्यवाही नहीं करने का निर्णय किया है। परंतु अगर आतंकवादी गोलाबारी या अन्य आतंकी गतिविधियों को जारी रखेंगे तो उस समय उसका प्रतिरोध करने को सुरक्षाबलों को छूट होगी। फिर भी यह क्यों नही सोचा गया कि जब केंद्र सरकार की कठोर नीतियों के कारण आतंकवाद पर अंकुश लगाने में सफलता मिल रही है और पिछले एक-दो वर्षों में सैकड़ों आतंकियों को मारा भी जा चुका है तो क्या ऐसे में युद्ध विराम राष्ट्रीय हित में होगा? क्या इस निर्णय के पीछे सुरक्षा बलों के सफल अभियान से आतंकियों को सुरक्षित करने का कोई षड्यंत्र तो नही है? यद्यपि वर्षों से यह स्पष्ट है कि जब भी रमजान के अवसर पर या अन्य किसी अवसर पर कश्मीर में आतंकियों के प्रति युद्धविराम किया गया तो जिहादियों ने इस छूट का अनुचित लाभ लेते हुए अपने बिखरे हुए व कमजोर पड़ गए आतंकी साथियों को पुनः संगठित किया और सबको शस्त्रों से भी सुसज्जित करके सुरक्षा प्रतिष्ठानों व निर्दोष नागरिकों पर भी आक्रमण किये थे। जिसके परिणामस्वरूप ऐसे युद्धविरामों की अवधि में हमारे सैकड़ों सुरक्षाबलों के सैनिकों व सामान्य नागरिकों को भी उन आतंकियों का शिकार बनना पड़ा था। क्या ऐसे अवसरों पर जिहादियों के आक्रमणों से लहूलुहान हुए सैनिकों और नागरिकों के परिवारों की पीड़ाओं के घावों को हरा होने दें?

अतः कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है कि जम्मू-कश्मीर में जो भी सरकार बनती है वह कभी ''रमजान'' के बहाने युद्ध-विराम करवाके, तो कभी ''हीलिंग-टच'' द्वारा और कभी मानवाधिकार की दुहाई देकर सुरक्षाबलों को हतोत्साहित करके जाने-अनजाने आतंकवादियों को ही प्रोत्साहित करती है। जिससे सदैव राष्ट्रीय हित प्रभावित होते रहे हैं। परंतु रमजान में युद्ध विराम के निर्णय से यह स्पष्ट होता है कि आतंकवादी एक विशेष धर्म से संबंधित होते हैं और उनका धर्म भी होता है। क्योंकि अब आप भली प्रकार समझ सकते हैं कि रमजान का

महीना जो केवल इस्लाम के अनुयायियों के लिए पवित्र होता है और जिनको सुरक्षा प्रदान करने के लिए युद्धविराम घोषित हुआ है, वे कौन है? वे सब मुसलमान है और इस्लाम मजहब/धर्म के मानने वाले है। अतः इससे यह भी स्पष्ट हुआ है कि आतंकवाद का भी धर्म है और वह है ''इस्लाम''।

क्या केंद्र सरकार पर कश्मीर की मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती का ऐसा कोई दबाव है जो राष्ट्र की सुरक्षा को चुनौती देने वाली युद्धविराम की अनुचित मांग को मानने के लिए विवश होना पड़ा? क्या यह आत्मघाती कूटनीतिज्ञता नही है? क्या यह अदूरदर्शी निर्णय कश्मीरी कट्टरपंथियों, अलगाववादियों व आतंकवादियों के आगे घुटने टेकने का संकेत तो नही है? क्या इससे पाक व पाक परस्त शत्रुओं को प्रोत्साहन नही मिलेगा? समाचारों से यह भी ज्ञात हुआ है कि केंद्र सरकार ने यह निर्णय इसलिये भी लिया है कि कश्मीर के शांतिप्रिय व अमन पसंद मुसलमान अपने धार्मिक रमजान के महीने को शांतिपूर्वक मना सकें। परंतु जब 1986 से हिंदुओं की हत्याओं व आगजनी का नंगा नाच आरम्भ हुआ और हिंदुओं को वहाँ से भागने को विवश होना पड़ रहा था तब ये अमन पसंद मुसलमान क्यों मौन थे? हिंदुओं को घाटी छोड़ देने की चेतावनी के साथ-साथ ''इस्लाम हमारा मकसद है'' ''कुरान हमारा दस्तूर है'' ''जिहाद हमारा रास्ता है'' ''WAR TILL VICTORY'' आदि नारे लिखे पोस्टर पूरी घाटी में लगाये गये। यही नही ''कश्मीर में अगर रहना है, अल्ला हो अकबर कहना होगा'' के नारे लगाये जाने लगे जिससे वहाँ का हिन्दू समाज भय से कांप उठा था। इन

अमानवीय अत्याचारों का घटनाक्रम 28 वर्ष पूर्व सन् 1990 में लाखों कश्मीरी हिंदुओं को वहाँ से मार-मार कर उनकी बहन-बेटियों व संम्पतियों को लूट कर भगाये जाने तक जारी रहा, तब ये शान्तिप्रिय कश्मीरी मुसलमान कहाँ थे? उस संकटकालीन स्थितियों को आज स्मरण करने से भी सामान्य हृदय कांपनें लगता है। इस पर भी कश्मीरी मुसलमानों को शांतिप्रिय समझना क्या उचित होगा? क्या इन शांतिप्रिय मुसलमानों ने कभी जिहाद के दुष्परिणामों से रक्तरंजित हो रही मानवता की रक्षार्थ कोई सकारात्मक कर्तव्य निभाया है? एक विडंबना यह भी है कि इन अमन पसंद लोगों के होते कश्मीर में अनेक धार्मिक स्थलों को आतंकवादी समय-समय पर अपनी शरण स्थली भी बना लेते है। वहाँ ''पाकिस्तान जिन्दाबाद'' व ''भारतीय कुत्तो वापस जाओं'' के नारे तो आम बात है साथ ही पाकिस्तानी व इस्लामिक स्टेट के झण्डे लहराए जाना भी देशद्रोही गतिविधियों का बड़ा स्पष्ट संकेत हैं। आतंकवादियों के सहयोगी हजारों पत्थरबाजों को क्षमा करने से क्या उनके अंधविश्वासों और विश्वासों से बनी जिहादी विचारधारा को नियंत्रित किया जा सकता है? मुस्लिम युवकों की ब्रेनवॉशिंग करने वाले मुल्ला-मौलवियों व उम्मा पर कोई अंकुश न होने के कारण जिहादी विचारधारा का विस्तार थम नही पा रहा है। इस विशेष विचारधारा के कारण ही जम्मू-कश्मीर राज्य में पिछले 70 वर्षों में अरबों-खरबों रुपयों की केंद्रीय सहायता के उपरांत भी वहाँ के बहुसंख्यक मुस्लिम कट्टरपंथियों में भारत के प्रति श्रद्धा का कोई भाव ही नही बन सका?

इतिहास साक्षी है कि मानवता का संदेश देने वाला हिन्दू धर्म सदियों से इस्लामिक आक्रान्ताओं को झेल रहा है। परंतु जब भी और वर्तमान में भी जिहाद के लिए विभिन्न मुस्लिम संप्रदायों व अन्य समुदाय के मध्य होने वाले अनेक संघर्ष इस बात के साक्षी है कि ''रमजान'' में कभी भी कहीं भी काफिरों व अविश्वासियों के विरुद्ध युद्ध विराम नही किया गया। बल्कि इन मजहबी आर्तकियों में अविश्वासियों के धार्मिक त्योहारों पर व स्थलों को अपनी जिहादी मानसिकता का शिकार बनाने में सदैव प्राथमिकता रही थी और अभी भी है।

क्या ऐसे में युद्धविराम करके आतंकवाद पर अंकुश लगाया जा सकता है? ऐसा प्रतीत हो रहा है कि आतंकवाद पर कठोर निर्णय लेने वाली मोदी सरकार अभी इस्लामिक आतंकवाद को नियंत्रित करने के लिए अपनी इच्छा शक्ति की दृढ़ता का परिचय कराना नही चाहती। जबकि शत्रुओं को हर परिस्थितियों में दण्डित करके कुचलना ही राष्ट्रीय हित में होता है। इस प्रकार राष्ट्रीय हितों को तिलांजलि देने से क्या ऐसा सोचा जा सकता है कि भविष्य में स्वस्थ रणनीति बनाने में हमारे रणनीतिकार भ्रमित तो नही किये जा रहे हैं? अत: वर्तमान विपरीत परिस्थितियों में युद्धविराम का निर्णय राजनीति के हितार्थ भी अनावश्यक व दु:खद है। राजनैतिक कारणों से लिये गये ऐसे शासकीय निर्णयों से ही हिंदुओं में तेजस्विता धीरे-धीरे नष्ट हो रही है और उनको निष्क्रिय किया जा रहा है। जिससे वे अपने शत्रु की शत्रुता को समझते हुए भी बार-बार कबूतर के समान आँखें बंद करने को विवश होते जा रहे हैं। जबकि बिल्ली रूपी जिहादी तो अपना काम कर ही रहे हैं। इसलिये नेताओं के साथ-साथ अब सोचना तो हम सबको भी होगा कि ''आतंकियों का भी धर्म होता है'' तो उनसे कैसे सुरक्षित रहें?

-विनोद कुमार सर्वोदय
(राष्ट्रवादी चिंतक व लेखक)
गाजियाबाद

❑

एक सैनिक के रूप में आपको हमेशा तीन आदर्शों को संजोना और उन पर जीना होगा। सच्चाई, कर्तव्य और बलिदान। जो सिपाही हमेशा अपने देश के प्रति वफादार रहता है, जो हमेशा अपना जीवन बलिदान करने को तैयार रहता है, वो अजेय है। अगर तुम भी अजेय बनना चाहते हो तो इन तीन आदर्शों को अपने हृदय में समाहित कर लो।

-सुभाष चन्द्र बोस

दुर्गा वाहिनी का शौर्य वर्ग आयोजित
22 से 29 मई तक आयोजित

विश्व हिन्दू परिषद के नारी संगठन 'दुर्गा वाहिनी' का शौर्य प्रशिक्षण वर्ग कल दिनांक 22 मई से प्रारंभ होने जा रहा है। रामबाग क्षेत्र स्थित जगदंबा डिग्री कॉलेज में आयोजित यह वर्ग दिनांक 29 मई तक आयोजित होगा। वर्ग के आयोजन की पूर्व संध्या पर आज सोमवार को विहिप के प्रांत संगठन मंत्री श्री मनोज जी द्वारा वर्ग स्थान पर वैदिक मंत्रोच्चार के साथ भूमि पूजन किया गया।

वर्ग का भूमि पूजन करते विहिप प्रांत संगठन मंत्री मनोज जी व अन्य

वर्ग के बारे में मनोज जी ने बताया कि हाल ही नई दिल्ली में घटित हुई निर्भया जैसी घटनाएँ देश में रोजाना घटित हो रही हैं। इन घटनाओं को रोकने के लिए बेटी को शारीरिक रूप से तैयार करने के जिम्मेदारी दुर्गा वाहिनी ने ली है। जैसे दंड चलाना, राइफल चलाना, रस्से पर चढ़ना, नियुद्ध आदि चीजों का अभ्यास ऐसे शिविरों के माध्यम से आत्म सुरक्षा हेतु सिखाए जाते हैं। नारी अबला नहीं, सबला है। इस विजय महामंत्र के साथ बेटी ही भारत का भविष्य है। हमें दुर्गा भाभी, महारानी लक्ष्मी बाई, महारानी अवंतिबाई, महारानी पद्मीनि जैसी देवियों के गुण आज के वर्तमान बेटियों में स्थापित करने हैं। वर्ग में बौद्धिक विकास की दृष्टि से अनेक विषयों पर चर्चा सम्पन्न होगी। लव-जेहाद, धर्मांतरण से राष्ट्रांतरण, कुटुम्ब प्रबोधन, समरसता, भारतीय हिन्दू वैदिक परंपराएँ एवं संस्कृति, गौ संवर्धन, प्रकृति, पर्यावरण आदि विषयों पर राष्ट्रीय एवं प्रांतीय अधिकारियों द्वारा प्रतिदिन बहिनों को बौद्धिक प्रबोधन द्वारा बौद्धिक क्षमताओं को विकसित किया जाएगा।

इस वर्ग में दुर्गा वाहिनी की नॉर्थ-जोन की संयोजिका रजनी ठकुराल, राष्ट्रीय संयोजिका मातृशक्ति मीनाक्षी पिशवे, प्रांत संयोजिका शशिबाला आदि अपना मार्गदर्शन देंगी। वर्ग के उद्घाटन में पूज्यराष्ट्र संत दिव्यानंद जी महाराज रहने वाले हैं। वर्ग की अनेक व्यवस्थाओं में सात दिन तक स्थानीय स्तर पर संचालन रहेगा। बेटी-पढ़ाओ-बेटी बचाओ, बेटी आत्मसंरक्षण का मूल मंत्र इस वर्ग में रहेगा। ❑

अतिथि का सत्कार

घर पर आया हुआ अतिथि देवता के तुल्य होता है, यदि कोई अतिथि आपके घर पर आया हुआ है तो अमृत ही क्यों न हो अकेले नहीं पीना चाहिए। जिस घर में अतिथियों का सत्कार नहीं होता वह घर घर नहीं शमशान होता है, ऐसे किसी भी घर की चौखट पर पैर भी पड़ जाए तो स्नान करना चाहिए और जिस घर में अतिथि सत्कार में कोई चूक नहीं होती वह घर तो साक्षात् तीर्थ के समान होता है। जो कोई भी सद् गृहस्थ पहले अतिथि को खिलाकर फिर स्वयं खाता है वह कभी भूखा नहीं सो सकता। जो व्यक्ति जाने वाले अतिथि की सेवा कर चुका है और आने वाले अतिथि की प्रतिक्षा करता है, वह स्वयं देवताओं का अतिथि बनता है अत: सदैव अतिथियों का आदर सत्कार करना चाहिए। -मुनि तरूण सागर जी महाराज

कोई व्यक्ति अपने कार्यों से महान होता है, अपने जन्म से नहीं।

-चाणक्य

पाक खुफिया एजेंसी आईएसआई का नया मिशन

उत्तराखंड में मस्जिदों और दरगाहों का जाल फैलाओ

-हरीश लखेड़ा

देव भूमि उत्तराखंड में पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई अपने नये मिशन में लगी है। आईएसआई की योजना है कि उत्तराखंड में मस्जिदों और दरगाहों का जाल फैला दिया जाए। हर मंदिर के बगल में मस्जिद बनाई जाए। देवभूमि को भी दंगों की चपेट में लाया जाए। भारत में बैठे उनके गुर्गे इस योजना पर अमल करने में जुटे हैं। पौड़ी जिले के सतपुली कस्बे में हाल ही की घटना इस साजिश की ओर इंगित कर रही है।

आईबी ने केन्द्र सरकार को आगाह किया है कि उत्तराखंड इस्लामी कट्टरपंथियों के निशाने पर है। सतपुली की घटना के बाद केन्द्रीय गृह मंत्रालय को सौंपी आईबी की रिपोर्ट में कहा गया है कि एक खुफिया एजेंसी आईएसआई उत्तराखंड में मस्जिदें और दरगाहें बनाकर अपना जाल फैलाना चाहती है। उत्तराखंड के शहरों हल्द्वानी, रामनगर, काशीपुर, कोटद्वार से लेकर दुगड्डा, बागेश्वर, अल्मोड़ा, श्रीनगर समेत लगभग सभी जह मस्जिदें बन चुकी हैं। सरकारी जमीनें हड़पकर दरगाहें भी बनाइ जा रही हैं। खासतौर पर पिथौड़ागढ़ और नेपाल के सीमांत क्षेत्रों में बड़ी संख्या में मस्जिदें बनाई जा रही है। धारचूला में बरेली के एक ठेकेदार नेमस्जिद बनवाई हैं।

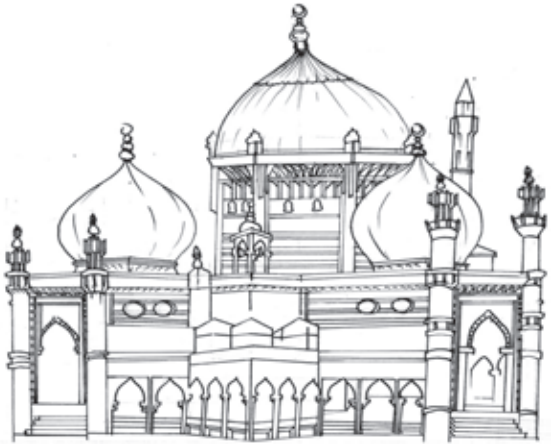

आईबी ने कहा कि सुनियोजित तरीके से उत्तराखंड में नजीबाबाद, सहारनपुर, रामपुर, मुरादाबाद, बरेली, मेरठ आदि क्षेत्रों से मुस्लिम आबादी को बसाया जा रहा है। प्रदेश में अब लगभग 18 फीसदी आबादी मुस्लिम हो चुकी है। इनमें बड़ी संख्या में बांग्लादेशी भी हैं। चूंकि उत्तराखंड के गाँव पलायन के कारण खाली होते जा रहे हैं। इसलिए वहाँ पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी को अपना खेले खेलने की आजादी जैसे मिल चुकी है। प्रदेश में लगभग 3000 गाँव उजड़ चुके है। गौरतलब है कि पिछले दिनों सतपुली कस्बा सांप्रदायिक दंगे की भेंट चढ़ते-चढ़ते बच गया। नजीबाबाद निवासी फल विक्रेता वसीम ने व्हाट्सऐप, फेसबुक पर केदारनाथ मंदिर को लेकर आपत्तिजनक फोटो अपलोड कर दी। इस केदार मंदिर की आपत्तिजनक फोटो के वायरल होते ही हिन्दू संगठनों से जुड़े तमाम कार्यकर्ता युवक नारेबाजी करते हुए अभियुक्त की दुकान पर पहुँच गये। उन्होंने पूरा सतपुली बाजार बंद करवाकर इसका भारी विरोध किया था। ❑

मैं चाहता हूँ कि जाति बंधन से ऊपर उठकर और संकीर्ण व अस्वाभाविक बंधन से मुक्त रहकर देश के समस्त नर-नारी अपनी योग्यता के अनुसार अधिक से अधिक उन्नति का समुचित अवसर प्राप्त कर सकें।

-गोपाल कृष्ण गोखले

धर्मान्तरणः कारण, भ्रम और असलियत

पिछले दिनों एक युवक के अनेक धार्मिक संस्थाओं का द्वार खटखटाने की जानकारी मिली। कारण था, उसके बीमार पिता इस संसार से जाने से पहले प्रायश्चित करना चाहते थे। उस कार्य के लिए वह अनेक लोगों से मिला। दरअसल उसके पिता ने बीस वर्ष पूर्व प्रेम विवाह किया था। उसके अपने परिवार में तो विशेष विरोध न था लेकिन दूसरे पक्ष के लोग किसी भी कीमत पर उस विवाह को स्वीकार करने को तैयार न था। तब उसने अपना धर्म परिवर्तन कर 'उस पक्ष' को संतुष्ट किया। उनके तीन संतान हुए। बच्चों के नाम जाहिर है बदले हुए धर्म के रखे गये। बीस वर्ष मेहनत मजदूरी करते बीत गये लेकिन उसके हृदय में घर वापसी की टीस बनी रही। वह इस संबंध में अपनी पत्नी और बच्चों से भी अक्सर चर्चा करता रहता था। इसी बीच वह बीमार हो गया तो उसका बड़ा बेटा चिंतित हुआ। उसने अनेक संस्थाओं से सम्पर्क किया लेकिन सफलता न मिली। इसी बीच बीमार पिता इस दुनिया से कूच कर गया। उसके परिजन गाँव से आये और अपने मूल धर्म के अनुसार उसका अंतिम संस्कार किया गया। उसके बाद बच्चों नें अपने स्वर्गवासी पिता की अंतिम इच्छा के अनुसार स्वयं के शुद्धिकरण कराने के प्रयास तेज कर दिये जिसमें वे सफल भी रहे। वे तीनों बच्चें अपनी माँ सहित अपने पूर्वजों के धार्मिक विश्वास को अपनाकर बहुत प्रसन्न अनुभव कर रहे हैं।

इस ताजा प्रसंग की चर्चा यह समझने के लिए करनी पड़ी कि क्या धर्मान्तरण का संबंध हृदय परिवर्तन से होता है या तत्कालीन परिस्थितियों का दबाव उन्हें ऐसा करने के लिए बाध्य करता है? क्या धर्मान्तरण किसी समस्या का समाधान है? क्या इससे समाज में शांति और खुशहाली आ सकती है? यदि ऐसा है तो देश विभाजन के समय पश्चिमी पंजाब (अब पाकिस्तान) और पूर्वी बंगाल (अब बंगलादेश) के जिन लाखों लोगों को अपने और अपने परिजनों के प्राण बचाने के लिए सामूहिक स्तर पर धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य होना पड़ा था, वहाँ खुशहाली तो दूर शांति भी क्यों नहीं है? भेदभाव की समाप्ति और सर्वसमानता के जिस दावे को बार-बार दोहराया जाता है पड़ताल करने पर उस दावे का भुरभुरापन सामने आता है। जिन्हें हिन्दू वर्णव्यवस्था से उत्पन्न विभेद और वंचना के विरुद्ध धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित किया गया तथा समानता के स्वप्न दिखाये गये लेकिन ये स्वप्न कभी पूरे नहीं हुए। धर्मान्तरण के बाद भी उनकी श्रेणी भेदपरक ही बनी रही। वहाँ भी भेदभाव, असमानता, अलग मस्जिद, चर्च, अलग कब्रिस्तान फिर कैसे कहे कि समानता के दावे सत्य हैं।

धर्मान्तरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो एकाधिक धर्म सम्प्रदायों के अस्तित्व में आने के साथ ही शुरू हो गयी थी। धर्म, जीवन और जगत को लेकर मूल्य-मान्यताओं और व्यवहार से जुड़ी धारणाओं का ऐसा समुच्चय है जो किन्हीं व्यक्तियों अथवा समुदायों में प्रचलन में होता है। यदि कोई व्यक्ति इस समुच्चय से परे होता है, भले ही वह पहले किसी धर्म को न मानता हो और पहली बार किसी धर्म को अपनाता है तो उसमें एक तरह का अन्तरण घटित होता है। धर्मान्तरण का आशय एक धर्म से दूसरे धर्म में अन्तरण से है। यह अलग बात है कि ऐसा किसी के द्वारा स्वेच्छा से किया जा रहा है या कि इसके पीछे दबाव अथवा प्रलोभन है। अपनी मान्यताओं व दृष्टिकोण का प्रसार धर्मान्तरण में निहित है। जब भी कोई व्यक्ति नये धर्म को अपनाता है तो उसे अपनी कुछ खास धारणाएँ छोड़नी पड़ती हैं। धर्म के संस्थाबद्ध होते ही धर्मान्तरण की प्रक्रिया वर्चस्व से जुड़ जाती है। तब एक धर्म दूसरे के सापेक्ष अपनी शक्ति को स्थापित करना चाहता है। इससे पैदा हुए द्वंद्व और संघर्षों का इतिहास काफी रक्तरंजित भी है।

यह एक दिलचस्प तथ्य है कि सम्प्रदायों का उभार कथित सभ्य समाजों में देखने को मिलता है। एक ने अपना साम्राज्य स्थापित कर दुनिया को जमकर लूटा तो दूसरे का इतिहास भी इससे भिन्न नहीं है। अब प्रकृति संसाधन (तेल) ने उसे समृद्ध बना दिया है। अतः दोंनो ही सहज प्राप्त धन का दुरूपयोग अपने धार्मिक विश्वास दूसरों पर थोपने के लिए कर रहे हैं। जिन क्षेत्रों में सामाजिक गतिशीलता भी अधिक पायी जाती है जिसके

चलते अन्तर सामुदायिक सामाजिक-सांस्कृतिक संक्रमण की प्रक्रिया निरंतर परिलक्षित होती है।

आदिवासी और देशज समुदायों में भी कुछ कारणों से मतभिन्नता, परस्पर द्वंद्व हो सकता हैं। कुछ समुदाय घूमन्तू भी हैं लेकिन जहाँ तक धार्मिक आध्यात्मिक मान्यताओं का प्रश्न है, कुछ विशिष्ट धारणाओं, मूल्यों और मान्यताओं को प्रकृति पूजा की श्रेणी रखा जा सकता है।

सभी प्राकृतिक परिघटनाओं के बीच परस्पर निर्भरता के संबंध की परिकल्पना, बहुदेववाद या प्रकृति पूजन की सहज स्वीकृति, मृतकों के साथ जीवितों के गतिशील संबंध का विचार (श्राद्ध और पुनर्जन्म की स्वीकृति के रूप में), विभिन्न मानव समूहों के अपने-अपने देवमंडल और धार्मिक विश्वासों की सहज तथ्य के रूप में स्वीकृत और जीवन के साथ मृत्यु के विरोधपरक संबंध की बजाय सह अस्तित्व की स्वीकृति। हम इन दो परम्पराओं की भिन्न परिणति देखते हैं। एक की परिणति धर्मान्तरण या 'सत्य' की विजय प्रति उपेक्षा बल्कि धर्मान्तरण को अस्वाभाविक मानने में होती है दूसरी प्रोफेटिक की परिणति 'सत्य' की विजय को अपरिहार्य और धर्मान्तरण को कर्तव्य मानने वाले यहूदी, इस्लाम और ईसाई पैगम्बरी धर्म हैं। लेकिन हिन्दू धर्म को इस श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। इस बात पर विस्तृत चर्चा से बचते हुए इतना ही कहा जा सकता है कि हिन्दू धर्म गैर यहूदी, गैर ईसाई, गैर इस्लामी बहुदेववादी, प्रकृति पूजक रहा है। उसमें समय-समय पर अनेक अवतारों की चर्चा भी होती रहती है। इधर अचानक अनेक स्वयम्भू भगवान भी सामने आये जो सनातन धर्म और मान्यताओं से कोई संबंध अथवा विश्वास नहीं रखते हैं। कुछ हिन्दुओं का मजारों पर जाना अथवा साई बाबा जैसे गैर हिन्दू की पूजा उपासना जैसे कृत्यों के कारण कुछ विद्वान इसकी तुलना गैर हिन्दू सम्प्रदायों के लक्षणों से करने लगे हैं।

इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती कि आदिवासी और देशज समुदायों को अपने पैगम्बरी सम्प्रदायों से जोड़ने के प्रयास दुनिया भर में हुए। भारत भी इसका अपवाद नहीं है। किसे याद न होगा कुछ वर्ष पूर्व अपनी भारत यात्रा के दौरान ईसाईयों के मुखिया पोप ने एशिया को ईसाई रंग में रंगने की ओर संकेत किया था। वास्तव में अपने संसाधनों के मायाजाल के चलते उनके लिए उन साधनहीन लोगों के बीच अपने धर्म को स्थापित करना अपेक्षाकृत आसान रहा है क्योंकि वहाँ उन्हें किसी प्रतिद्वन्द्वी धर्म सम्प्रदाय से टकराना नहीं पड़ता। विशेष रूप से भारतीय समाज इस मामले में अति उदासीन रहा है। साम्राज्यवाद के दौर से आज तक अपनी शक्ति और संसाधनों के वर्चस्व के चलते मिशनरी के ये प्रयोग बहुत कारगर रहे हैं। यह स्मरणीय है कि भारत में आदिवासी वनांचलों, तटीय सीमांत और पर्वतीय क्षेत्रों में बसे हुए है। मुख्यधारा के समाज से दीर्घकालिक अलगाव के बावजूद उनके धर्मविश्वास अक्षुण रहे हैं।

इस्लामी विद्वानों की नजर में दुनियादारुल-इस्लाम और दारुल-हरब दो भागों में बंटी है। दारुल-हरब ऐसे स्थान है जहाँ अन्य आस्थाओं वाले अर्थात् गैर-इस्लामिक लोग रहते हो। उसे दारुल-इस्लाम बनाना उनका पुनीत कर्तव्य है। इस्लाम आरंभ में शहर कस्बों पर केन्द्रित था। सुदूर आदिवासी अंचलों तक उनकी पहुँच नहीं बन पायी। जबकि ईसाई मिशनरीज ने दुर्गम आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य और दूसरे सेवा कार्यों के साथ अपनी घुसपैठ करते हुए काफी हद तक प्रभाव बनाया। उनके तीन-चार शताब्दियों के प्रयासों और हिन्दुओं की निष्क्रियता का परिणाम है कि पूर्वोत्तर के राज्य आज ईसाई बहुल्य हो चुके हैं। बहुल्य का अर्थ यह भी नहीं कि वहाँ मूल विश्वास वाले लोगों पूरी तरह से समाप्त हो चुके हैं। आज भी केवल पूर्वोत्तर ही नहीं अन्य मिशनरी प्रभावित क्षेत्रों में आदिवासी समुदाय ईसाई और गैर ईसाई धड़ों के बीच बँट गये। यह विभाजन क्रमशः सामाजिक-सांस्कृतिक दूरी का रूप लेता गया। मिशनरियों की प्रतिक्रिया में कुछ हिन्दूवादी संगठन भी अपने ढ़ंग से उनके लोगों के बीच सेवा कार्य कर रहे हैं। बेशक उनके पास ईसाई मिशनरी जैसे अकूत संसाधन नहीं हैं लेकिन वे लोगों को उनके पूर्वजों का गौरव, उनकी मान्यताओं का स्मरण कराते हुए अपने बिछड़े हुए भाई-बहनों से फिर से मिलने के लिए प्रेरित करते है। लेकिन विदेशी धन और समर्थन के बल पर सक्रिय तरह-तरह के षड्यंत्र रचने में माहिर तत्व घर

वापसी के प्रयासों को बदनाम करने के लिए चक्रव्यूह रचते रहते हैं। उन पर झूठे आरोप लगाना, स्वयं ही अपने घासफूस को जलाकर स्थानीय हिन्दुओं अथवा उनके धार्मिक प्रतीकों पर अपने 'चर्च जलाने अथवा तोड़फोड़' के मनघडंत के आरोप आम बात है। उनकी इन चालों को तत्काल विदेशी समर्थन भी मिलता है जबकि भारतीय समाज सब कुछ जानते हुए भी आत्मघाती रूप से मौन बना रहता है।

यह सत्य है कि हमारा संविधान स्वेच्छा से धर्मान्तरण की अनुमति देता है। लेकिन जहाँ लालच, प्रलोभन, छदम् तरीके अपनाकर ऐसा किया जा रहा है वहाँ इसे रोकने तथा दोषियों को दंडित करने की आवश्यकता है। आदिवासी और पिछड़े क्षेत्रों में मिशनरी के पास विदेशी धन, बल स्पष्ट दिखाई देते हैं फिर भी उसे 'हृदय परिवर्तन' बताना संविधान की मूल भावना का मजाक है। अत: यह आवश्यक है कि धर्म परिवर्तन पर रोक लगानी चाहिए।

इधर बहुत तेजी से एक ऐसा अभियान उभरा है जो दलितों को हिन्दू समाज से अलग करने की कोशिश में लगा है। निश्चित रूप से किसी भी प्रकार का जन्मना भेदभाव/वंचना अनुचित है। इस व्यवस्था को उचित ठहराये जाने का प्रश्न ही नहीं। कर्म आधारित वर्णव्यवस्था को जन्मना जाति में बदल दिया गया है। लेकिन दलित कभी भी शेष हिन्दू समुदाय से अलग नहीं रहे। इस देश की सामाजिक व्यवस्था परस्पर सहयोग और निर्भरता की रही है। आपसी स्नेह भाईचारा, 'गाँव की बेटी, सबकी बेटी' की भावना के दर्शन आज भी सहज हो जाते हैं। लेकिन यह भी कटु सत्य है कि राजनीति ने तेजी से समाप्त हो रहे भेदभाव और अंतर को रोकने में अहम भूमिका निभाई है। अपनी-अपनी जाति को अपने वोटबैंक के रूप में तैयार करने की प्रवृति ने जातिगत विषमता और द्वेष को बढ़ावा दिया है। इस विकृति के जिम्मेवार अनेक तत्व हैं लेकिन मूल भारतीय मानस इसका कदापि पक्षधर नहीं रहा है।

यह कटु सत्य है कि ईसाइयत या इस्लाम अपनाकर भी हिन्दू नाई से मुस्लिम नाई अथवा हिन्दू धोबी से मुस्लिम धोबी आदि होने के अतिरिक्त उनकी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। ईसाई संस्थाओं का नियंत्रण एंग्लो-इंडियन लोगों के हाथ में है जबकि ईसाई बने दलित और आदिवासी वहाँ अधीनस्थ स्थिति में हैं। इधर उन्होंने अपने असंतोष को संगठित करना शुरू किया है और यह अन्तभेद तीव्र होता जा रहा है। यहाँ तक कि भारतीय परम्परा के सिख सम्प्रदाय श्रेष्ठ होते हुए भी जाति से मुक्ति न हो सका। बाबा साहिब अम्बेडकर और उनके अनुयाइयों ने बौद्ध धर्म अपनाया। वहाँ वे बौद्ध की बजाय 'नव बौद्ध' कहलाये। यह अप्रत्यक्ष रूप से उनकी जाति की पहचान है। अत: कहा जा सकता है कि कोई भी सम्प्रदाय जाति, वर्ग भेद से व्यवहारिक और वास्तविक रूप से मुक्त नहीं पाया है। अत: धर्मान्तरण की घोषित अवधारणा प्रथम चरण में ही खण्डित हो जाती है।

यदि हम इस विषय पर गंभीरता से अध्ययन करे तो यह स्पष्ट हो जाता है कि कुछ सामाजिक आर्थिक मुद्दे हैं जिन पर जाति या धर्म के आधार पर नहीं, समानता की सोच के आधार पर विचार करते हुए सही समाधान तलाशे जाने की आवश्यकता है। जिस तरह नगरों, महानगरों में श्रमिक की, गाँव में किसान की समस्याएँ जोर शोर से उठाई जाती है आदिवासियों के जीवन से जुड़े मुद्दों पर भी चिंतन होना चाहिए। उनकी सांस्कृतिक स्वायत्तता कायम रहनी चाहिए। न कि उन्हें किसी एक खास विदेशी धर्म समुदाय के झंडे तले लाया जाये। ऐसा करना न केवल अस्वाभाविक और विस्फोटक होगा बल्कि मूल समस्याओं से भटकाने वाला होगा। अत: भारत सरकार तथा सभी राज्य सरकारों का कर्तव्य है कि धर्मान्तरण के लिए सक्रिय विदेशी तत्त्वों को तत्काल निकाल बाहर करें। धर्मान्तरण पर रोक लगाई जाये ताकि देश में अनावश्यक रूप से जारी छद्म विवादों का अन्त हो सके।

यहाँ यह समझना बहुत जरूरी है कि देश में धार्मिक वातावरण को बिगाड़ने अर्थात् धर्मान्तरण को बढ़ावा देने में तथाकथित 'सेकुलरों' का बहुत बड़ा योगदान है। धार्मिक स्वतंत्रता के नाम पर तुष्टीकरण की विभाजक नीति ने ही ऐसे लोगों के इरादों को गति प्रदान की। इसी प्रकार 'लव

शेष पृष्ठ 22 पर....

झूठ क्यों बोलते हैं राहुल गांधी?

-लोकेन्द्र सिंह

कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गाँधी और उनके राजनीतिक सलाहकारों का राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संबंध में अध्ययन ठीक नहीं है। इसलिए जब भी राहुल गाँधी संघ के संबंध में कोई टिप्पणी करते हैं, वह बेबुनियाद और अतार्किक होती है। संघ के संबंध में वह जो भी कहते हैं, सत्य उससे कोसों दूर होता है। एक बार फिर उन्होंने संघ के संबंध में बड़ा झूठ बोला है। अब तक संघ की नीति थी कि वह आरोपों पर स्पष्टीकरण वक्तव्य से नहीं, अपितु समय आने पर अपने कार्य से देता था। संचार क्रांति के समय में संघ ने अपनी इस नीति को बदल लिया है। यह अच्छा ही है। वरना, इस समय झूठ इतना विस्तार पा जाता है कि वह सच ही प्रतीत होने लगता है। झूठ सच का मुखौटा ओढ़ ले, उससे पहले ही उसके पैर पकड़ कर पछाड़ने का समय आ गया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संबंध में राहुल गाँधी के हालिया बयान पर संघ ने कड़ी आपत्ति दर्ज कराई है।

संघ के सह-सरकार्यवाह डॉ. मनमोहन वैद्य ने वक्तव्य जारी कर कहा है कि कांग्रेस और उसके अध्यक्ष राहुल गाँधी 'घिनौनी राजनीति' कर रहे हैं। संघ झूठ के आधार पर चलने वाली उनकी घिनौनी राजनीति की भर्त्सना करता है। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गाँधी ने अपने अधिकृत फेसबुक पेज पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत और सह-सरकार्यवाह डॉ. मनमोहन वैद्य के संबंध में झूठी बातें लिखी हैं। अपनी पोस्ट में राहुल गाँधी ने बताया है कि यह लोग अनुसूचित जाति-जनजातियों को संविधान में दिए गए आरक्षण को खत्म करना चाहते हैं। राहुल गाँधी की इस पोस्ट पर संघ ने उचित ही संज्ञान लिया है। यह सरासर झूठ है। संघ के सरसंघचालक या किसी भी अन्य शीर्ष अधिकारी ने कभी भी आरक्षण को समाप्त करने की बात नहीं की है।

आरक्षण के विषय में संघ पदाधिकारियों के वक्तव्य को मीडिया ने भी तोड़मरोड़ कर प्रस्तुत किया है। चाहे वह सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत का पाञ्चजन्य में प्रकाशित साक्षात्कार के एक अंश का मामला हो या फिर सह-सरकार्यवाह डॉ. मनमोहन वैद्य का अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख रहते जयपुर साहित्य उत्सव (जयपुर लिटरेचर फेस्टीवल) में दिए गए वक्तव्य पर मचा बवाल हो। यदि आरक्षण पर हम संघ के दृष्टिकोण का अवलोकन करेंगे तो पाएंगे कि वह आरक्षण को जारी रखने के पक्ष में है। संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभाओं में समय-समय पर आरक्षण के समर्थन में प्रस्ताव पारित किए गए हैं। इसलिए यह कहना कि संघ अनुसूचित जाति-जनजातियों का आरक्षण समाप्त करना चाहता है, निराधार और सफेद झूठ है। अपितु, संघ का अधिकृत मंतव्य तो यही है कि जब तक समाज में भेदभाव है, जाति के आधार पर असमानता है, तब तक आरक्षण जारी रहना चाहिए।

यहाँ यह भी विचार करना चाहिए कि संघ पर लगाए अपने आरोपों के संदर्भ में कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गाँधी ने कोई तथ्य और तर्क प्रस्तुत नहीं किया है। उन्होंने अपने फेसबुक पेज और ट्वीटर हैंडल पर लगभग दो मिनट का एक वीडियो जरूर जारी किया है। इसमें 2016 में गुजरात के उना में दलितों के साथ हुई मारपीट की घटना की क्लिप और मध्यप्रदेश में पुलिस भर्ती परीक्षा के दौरान कुछ उम्मीदवारों के सीने पर एससी-एसटी लिखे जाने की घटना का उल्लेख है। वीडियो में यह आरोप लगाया है कि आरएसएस और भाजपा के वरिष्ठ नेताओं के उकसावे पर यह घटनाएँ हो रही हैं। किंतु यह भी बिना प्रमाण के कहा गया है।

अपनी राजनीतिक दुकान को बचाने के लिए राहुल गाँधी अब झूठ का सहारा ले रहे हैं। वह यह भी समझ गए हैं कि अनुसूचित जाति-जनजाति वर्ग कांग्रेस के हाथ से छिटक गया है। अब यह वर्ग भाजपा और मोदी के पाले में पहुँच गया है। उसे वापस लाने के लिए ही राहुल गाँधी आजकल हर हथकंडा अपना रहे हैं। वह अनुसूचित जाति-जनजाति वर्ग में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रति नफरत की भावना को जन्म देने की कोशिश कर रहे हैं, ताकि यह वर्ग मोदी के विरोध में खड़ा हो जाए और कांग्रेस

उसका लाभ उठा सके। इस प्रयास में वह सफेद झूठ बोलने में भी कोई संकोच नहीं कर रहे। भले ही उनके झूठ का खामियाजा समाज को भुगतना पड़ रहा हो। दो अप्रैल को देश के विभिन्न हिस्सों में ऐसे ही झूठ का नुकसान संपूर्ण हिंदू समाज को उठाना पड़ा। एससी-एसटी एक्ट में बदलाव पर राहुल गाँधी ने अनुसूचित जाति-जनजाति वर्ग के गुस्से को और अधिक भड़काने के लिए साफ झूठ बोला था। भाजपा एवं मोदी सरकार को 'दलित विरोधी' बताने के लिए वह यह कहने से भी नहीं चूके कि एससी-एसटी एक्ट को हटा दिया गया है। राष्ट्रीय नेता द्वारा अपनी राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा और लाभ के लिए इस प्रकार के झूठ बोलना घिनौनी राजनीति ही है।

देश में कुछ एक ही संस्थाएँ हैं, जो पूरे समर्पण से समाजहित में सक्रिय हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ उसमें सर्वोपरि है। संघ समाज में सामाजिक समरसता का वातावरण बनाने के लिए संकल्पबद्ध है। इसलिए संघ पर आक्षेप लगाते समय राहुल गाँधी को अधिक सतर्कता बरतनी चाहिए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ उनका राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी नहीं है। किंतु देखने में आ रहा है कि राहुल गाँधी अपनी राजनीतिक लड़ाई में भाजपा के साथ बार-बार संघ को भी घसीट रहे हैं। उनको अपना राजनीतिक सलाहकार बदल लेना चाहिए। या फिर स्वयं संघ के संबंध में अध्ययन प्रारंभ करना चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि राहुल गाँधी को संघ के संबंध में जानकारी शून्य है। राहुल गाँधी पहले भी संघ को लेकर बेतुकी बातें कर चुके हैं, जिनमें संघ की तुलना आतंकवादी समूह सिमी से करना और संघ पर महात्मा गाँधी की हत्या का आरोप लगाना प्रमुख है।

झूठे आरोपों के इस राजनीतिक खेल से संघ की प्रतिष्ठा पर कोई प्रतिकूल असर नहीं हुआ, बल्कि देशभर में राहुल गाँधी की छवि ही धूमिल हुई है और उनकी राजनीति का स्तर भी गिरा है। राहुल गाँधी अब कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं, इसलिए उन्हें अब परिपक्वता दिखानी चाहिए। सोच-विचार कर बोलना चाहिए। झूठ के सहारे नौका पार नहीं लगती, बल्कि बीच भंवर में डूब जाती है। कांग्रेस और राहुल गाँधी संघ के संबंध में जितना झूठ बोलेंगे, जनता के बीच उतना ही अधिक निंदा के पात्र बनेंगे। यदि कांग्रेस और उसके नेता संघ के कार्य का सम्मान नहीं कर सकते तो कम से कम उन्हें संघ पर झूठे आरोप लगाने से बचना चाहिए। यह उनके ही हित में है।

(लेखक विश्व संवाद केंद्र, भोपाल के कार्यकारी निदेशक हैं।)

.....पृष्ठ 20 का शेष

जेहाद' की जाँच भी आवश्यक है। एक धर्म विशेष में तेजी से बढ़ते प्रेम विवाह यदि कुछ संकेत है तो उसे समझना होगा। ऐसे वैवाहिक संबंधों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उन्हें किसी एक सम्प्रदाय के विधि विधान से नहीं बल्कि विशेष विवाह अधिनियम के अन्तर्गत कानून पंजीकृत कराने का अनिवार्य प्रावधान किया जाये। प्रेम करने वालों पर उनके स्वजनों द्वारा विवाह न करने के लिए दबाव बनाया जाना गैरकानूनी माना जाता है तो प्रेम विवाह के बाद धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य करना गैरकानूनी क्यों नहीं होना चाहिए? सेवा कार्यों की आड़ में धर्मान्तरण आस्थाओं का व्यापार है। अतः सभी प्रबुद्धजनों को समाज और सरकार पर देश की संस्कृति की रक्षा तथा समाज में स्थायी शांति और सद्भावना के लिए धर्मान्तरण पर रोक का दबाव बनाना चाहिए।

- डॉ. गौरांगशरण देवाचार्य
संपादक हिन्दू स्पिरिट
hinduspirit@rediffmail.com
पो.बा. नं- 11, हिम्मत नगर, गुजरात

❑

इस बात को व्यक्त मत होने दीजिये कि आपने क्या करने के लिए सोचा है, बुद्धिमानी से इसे रहस्य बनाये रखिये और इस काम को करने के लिए दृढ रहिये।

शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है। एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पता है, शिक्षा सौंदर्य और यौवन को परास्त कर देती है।

-चाणक्य

सर एक झूठ यह भी है

अंग्रेजी की एक कहावत प्रसिद्ध है- child is the father of man 'बच्चा मनुष्य का पिता है'। इस कहावत से असहमति भी हो सकती है। कहा जा सकता है कि बच्चा बाप कैसे हो सकता है। लेकिन ऐसा कहने वाले भी इस बात से असहमत नहीं होते कि 'कुछ बच्चे बड़ों के भी कान काटते हैं'। जिस तरह 'कान काटना' शब्द में कान नहीं कट रहे हैं। यह तो केवल प्रतीकात्मक अथवा कहावत, मुहावरा है। ठीक उसी प्रकार बच्चे का मनुष्य का बाप होने को सपाट शब्द में लेने की बजाय थोड़ा गंभीरता से लेने की आवश्यकता है। खैर पहले अपने अनुभव की चर्चा की जाये, जहाँ एक अबोध बालक के मुख से बहुत गंभीर बात सुनने का अवसर मिला। वह बच्चा उस क्षण सोच ही नहीं सकता था कि उसके दो शब्दों की सीमा अनन्त आकाश है।

बात तब की है जब मैं एक विद्यालय में प्रबंधक की भूमिका का निर्वहन कर रहा था। केवल शिक्षा ही नहीं बल्कि अनेक प्रकार की समस्याओं से प्रतिदिन सामना होता था। कभी-कभी विवाद सुलझाने की जिम्मेवारी भी होती थी। एक दिन हमारे विद्यालय की प्राइमरी शाखा के तीसरी कक्षा के एक बालक की माँ प्रातः में ही कह गई थी कि 'उसके परिवार में कोई बीमार है। वह उसे लेकर अस्पताल जा रही है अतः संभव है कुछ विलंब हो जाये, इसलिए कृपया उसके बच्चे को कुछ देर यहीं रोक ले जिससे वह इधर-उधर न भटके।' सारा क्षेत्र परिचित था। सभी अपने ही थे अतः उस माँ के आग्रह को अपना सामाजिक दायित्व समझकर मैंने उसे अपने कार्यालय में बैठा लिया। जानकारी मिली कि बच्चा पढ़ाई में बहुत अच्छा तो नहीं था परंतु धीर गंभीर चुप-चुप रहने वाला था।

मुझे हमेशा से ही बच्चों से बहुत लगाव है। उनके बचपन, उनकी सरलता में मुझे अपने बचपन का अहसास होता है। छोटे बच्चों का तुतलाना मुझे आज भी उनके स्तर पर ले जाता है। रेल हो या बस, पार्क हो या पिकनिक, जहाँ भी कोई बच्चा मिला, अपनी दोस्ती शुरु।

दोपहर का समय था। मेरा भोजन आया तो मैंने पहले उस बच्चे को भोजन कराया और फिर स्वयं ग्रहण किया। अभी कुछ क्षण ही बीते थे कि विद्यालय के एक अस्थाई कर्मचारी को मेरे सामने प्रस्तुत किया गया जिस पर आरोप था कि उसने चोरी की है। मैंने उस कर्मचारी को भी कुर्सी पर बैठाकर ठण्डा पानी दिया। घबराहट के कारण उसे कुछ सूझ नहीं रहा था। पानी का गिलास हाथ में पकड़े बहुत देर तक बैठा रहा। तो मैंने उसे कहा- 'घबराओं मत, पानी पीकर जो बात हो उसे सच-सच मुझे बता दो। मैं तुम्हारी मदद करूँगा।'

वह बोला, 'सर मैंने कभी झूठ नहीं बोला। मैं सच कहता हूँ-मैंने चोरी नहीं की।' इससे पहले कि मैं उसे कुछ कहता मेरे पास बैठे सात-आठ वर्ष के उस बालक ने धीरे से कहा, 'एक झूठ यह भी है।'

मैं हैरान कि उसने कितना बड़ा सत्य कहा है। मैंने उसकी तरफ देखते हुए कहा, 'एक बार फिर दोहराओं।' बच्चा कुछ घबराया। शायद उसे लगा कि उसके मुख से कुछ गलत निकल गया है। विद्यालय से समाज तक मेरी छवि सख्त अनुशासन वाली रही है इसलिए घबराहट में वह 'सर, वो वो!!' ही कह सकता।

जब मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा, 'शाबाश बेटा, तुमने बहुत अच्छी बात कही है।' तो उसके चेहरे पर मुस्कान खिल उठी। मैंने तत्काल अलमारी खोलकर कहानियों की एक पुस्तक उसे भेंट की।

इस घटना को लगभग साढ़े तीन दशक बीत चुके हैं। उस बालक की अगली पीढ़ी भी युवा हो चुकी है। शायद उसे याद भी न होगा कि उसने उस दिन अनजाने में कितनी कीमती बात कही थी। आज भी जब मै 'झूठ' शब्द सुनता या पढ़ता हूँ तो मेरे सामने उस बालक का भोला भाला चेहरा प्रकट होकर कहता है, 'सर एक झूठ यह भी है!'

आज भी जब समाचार पत्र पढ़ते हुए दो नेताओं द्वारा एक दूसरे को झूठा कहने की ओर ध्यान गया तो उस बालक के कहे वे शब्द एक बार फिर मेरे स्मृति पटल पर दस्तक दे रहे हैं- 'सर एक झूठ यह भी है!'।

शेष पृष्ठ 24 पर....

परिषद शिक्षा वर्ग-2018
इन्द्रप्रस्थ क्षेत्र

इन्द्रप्रस्थ क्षेत्र का परिषद शिक्षा वर्ग दिनांक 20 मई से प्रारम्भ होकर 30 मई 2018 शाम तक रहेगा। इस वर्ष पंजाब प्रान्त गुरुद्वारा श्री बैनी साहिब लुधियाना में हुआ। क्षेत्र के पाँच प्रांतों के कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।

10 दिवसीय परिषद शिक्षा वर्ग के उद्घाटन के सुअवसर पर संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र जैन जी, इन्द्रप्रस्थ क्षेत्र संगठन मंत्री मा. करुणा प्रकाश जी, केन्द्रीय उपाध्यक्ष श्री बालकृष्ण नाइक जी, हरियाणा प्रान्त संगठन मंत्री श्री विवेकानन्द जी, हिमाचल प्रदेश कार्याध्यक्ष व वर्गाधिकारी श्री लेखराज राणा जी, संत श्री रक्षपाल नामधारी जी एवं संत श्री हरपाल नामधारी जी उपस्थित रहे।

इन्द्रप्रस्थ क्षेत्र के सभी 5 प्रांतों से लगभग 142 कार्यकर्ताओं ने वर्ग में भाग लिया जिसमें 15 मातृशक्ति कार्यकर्ता की उपस्थिति रही। वर्ग में सुबह 4:30 जागरण से लेकर रात्रि 10:30 तक लगातार शारीरिक, बौद्धिक, चर्चा जानकारी, कृति सत्र, सत्संग के कार्यक्रम रहे। सुबह ध्यान, योग, आसन, प्राणायाम आदि की शिक्षा दी जाती है।

बौद्धिक सत्र में विश्व हिन्दू परिषद के नवनिर्वाचित अंतर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष मा. आलोक जी, केन्द्रीय प्रन्यासी

मण्डल के मार्गदर्शक मा. दिनेश चन्द्र जी, केन्द्रीय उपाध्यक्ष मा. चम्पत राय जी, मा. बालकृष्ण नाईक जी, मा. देवजी भाई रावत, मा. बनवीर सिंह जी, श्री प्रेम शंकर जी, श्री लेखराज जी, श्री विवेकानन्द जी, का अलग-अलग विषयों पर उद्बोधन हुआ। मा. चम्पत राय जी 29, 30 मई दो दिन वर्ग में रहकर प्रतिदिन अलग-अलग विषयों का प्रतिपादन किया।

-जय प्रकाश डाबला
प्रचार प्रसार प्रमुख
विहिप दिल्ली प्रांत
मो. 9871880086

❑

....पृष्ठ 23 का शेष

सच तो यह है कि सच के नाम पर झूठ खूब बिकता है। लगता हे जैसे झूठ के बिना काम ही नहीं चलता। झूठे दावे और वादे कर केवल नेता ही नहीं हर कम्पनी अपना माल बेचती है। हम सब भी तो अपनी झूठी शान के लिए अपना और दूसरों का सुख चैन छीन रहे हैं। दरवाजे पर दस्तक होने पर बच्चे को सिखाते हैं, 'बाहर जाकर बोल दो, पापा घर पर नहीं है।'

वाह री दुनिया! तेरे सच, तेरा झूठ के दावे और तेरे एक से बढ़कर एक रसीले गीत, 'सजन रे झूठ मत बोलो, खुदा के पास जाना है! न हाथी है, न घोड़ा है वहाँ पैदल ही जाना है!' से 'झूठ बोले कौव्वा काटे' तक अनन्त माया जाल है।

सोचता हूँ कि यह सब भी झूठ के अतिरिक्त आखिर और क्या हैं?

❑

संसार में सफल और सुखी वही लोग हैं, जिनके अन्दर विनय हो और विनय विद्या से ही आती है।
जीवों में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। क्यूंकि उसके पास आत्मविवेक और आत्मज्ञान है।
कोई मनुष्य अगर बड़ा बनना चाहता है, तो छोटे से छोटा काम भी करे, क्यूंकि स्वावलम्बी ही श्रेष्ठ होते है।

-ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

सनातन धर्म की सनातनता कैसे और क्यों?

सनातन धर्म यह वाक्य प्रयोग प्रथम बार किसने, कब कहा यह इतना महत्त्वपूर्ण नही है जितना कि इस प्राचीन सनातन हिन्दुत्व का अद्यातन रहना। सनातन का अर्थ कई बार विद्वतजन केवल इसकी प्राचीनता से करते है। यद्यपि यह सच है कि भारतभूमि में उत्पन्न महर्षियों ने अन्तर्मुख होकर जिन अमोलक, सार्वभौम एवं शाश्वत मूल्यों को जाना वे ही शाश्वत मूल्य इस सनातन हिन्दुत्व के अधिष्ठान बन गए। ये शाश्वत मूल्य अपरिवर्तनीय होने के कारण इन पर परिवर्तनीय हिन्दू जाति की समाज व्यवस्था बनती गयी और यह जाति अद्यावत एवं युगानुकूल बनी रही। सनातन का मतलब केवल प्राचीन नहीं है तो सनातन का अर्थ है चिरपुरातन के साथ नितनूतन भी।

कोई समाज केवल चिरपुरातन का गौरव तो रखता है पर उसमें अद्यावत रहने की जीवनीशक्ति लुप्त हो जाती है तो वह समाज मरणधर्मा बनकर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। अमेरिका से प्रकाशित 'हिस्टोमेप' के अनुसार अनेक जातियाँ (राष्ट्र) जगत में आयीं, कुछ समय उन्होंने अपनी गति दिखायी और फिर वे तिरोहित हो गयीं, क्यों? क्योंकि इस प्रकार की जातियों में अद्यावत, युगानुकूल रहने की विशेषता नहीं थी। ये मौसमी जीव की तरह पैदा होकर मौसम के अवसान के साथ मृत्यु को प्राप्त हो गए।

क्यों भारत में उद्‌भूत यह सनातन धर्म या हिन्दुत्व आज भी विद्यमान है? जब-जब इस समाज जीवन में किन्हीं कारणों से ठहराव आया है तब-तब इस भारतीय धरा पर महान् विभूतियों ने जन्म लेकर धर्म के शाश्वत मूल्यों के प्रकाश में युगानुकूल समाज व्यवस्था का निर्माण किया है। इस कारण यह हिन्दू समाज जिस पर आक्रमणकारियों ने भयंकर आक्रमण कर इसे नष्ट करना चाहा फिर भी नष्ट नहीं हुआ। देश में उत्पन्न ऋषियों ने व्यवस्था बनायी यह सामान्य धर्म है, यह विशेष धर्म है, यह आपद्‌धर्म है। सभी प्रकार की परिस्थितियों में अपने शाश्वत मूल्यों की रक्षा करने हेतु समयानुकूल परिवर्तन स्वीकार किया गया। शाश्वत सुरक्षित रहे चाहे हमें बलिदान ही क्यों न देना पड़े। इन शाश्वत मूल्यों की रक्षा हेतु सामान्य मनुष्य ही नहीं तो ऋषियों को भी आपद्‌धर्म का पालन करना पड़ा है।

शाश्वत क्या है?

आचार और विचारों से जीवन उद्‌घाटित होता है। वे कौन से आधारभूत मूल्य हैं जिन्हें आधार बनाकर जीवन रचना की जा सकती है? सनातन भारत इस हेतु कुछ लक्षणों को प्रकट करता है। जैसे:-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

उपर्युक्त श्लोक में दस लक्षणों की ओर संकेत किया है। यथा-धृति, क्षमा, दम, चोरी न करना, भीतर-बाहर की शुद्धि, इन्द्रियों का निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य और क्रोध न करना। धर्माचरण हेतु इस सनातन परम्परा ने धर्म के अनेक लक्षणों को दर्शाया है जिन पर आरूढ़ रहकर इस सनातन धर्म का अनुपालन किया जा सकता है। धर्म के लक्षणों को ध्यान में रखकर इस देश के मनीषियों ने देश, कालानुसार व्यवस्था दी।

इसके कारण यह धर्म मृत्युंजय बनकर आज तक विद्यमान है।

मृत्युंजय का रहस्यः-

अनेक बार श्रद्धालु सन्त व सामान्य नारिक बड़ी ही सरलता से कह देते है कि यह धर्म सनातन है। यह कभी भी नष्ट नहीं होगा। ऐसे श्रद्धालुओं की भावना शुद्ध हो सकती है पर पूर्ण सत्य को ध्यान में रखना होगा। संसार में श्रेष्ठ संस्कृति धर्म वाला बेबिलोनिया, मिस्र, युनान आदि अनेक संस्कृतियाँ क्यों नष्ट हो गयी? उनके नष्ट होने के कारणों पर ध्यान देना होगा। हम क्यों चल रहे हैं? हम इसलिए नहीं जिन्दा हैं कि हमें किसी ने मारने का प्रयत्न नहीं किया। हम इसलिए भी जिन्दा नहीं है कि हमने चुनौती की बेला में कोई प्रयत्न नहीं किया। फिर भी यह धर्म सनातन है इसलिए जिन्दा हैं। इस प्रकार की श्रद्धा और विचार बराबर नहीं है।

पिछले हजारों वर्षों से इस देश में बौद्धिक, वैचारिक, आध्यात्मिक और शारीरिक दृष्टि से अन्वेषण, लेखन, चिन्तन एवं संघर्ष चलता रहा है। यह धर्म मात्र निष्क्रिय श्रद्धालु लोगों के कारण जिन्दा नहीं है बल्कि यह धर्म कपिल, कणाद, जैमिनी, व्यास, प्रभृति अनेक चिन्तक,

लेखकों के कारण जिन्दा है। अनेक बार ऐसे प्रसंग उपस्थित हुए हैं कि यह सनातन परम्परा नष्ट हो जायेगी पर उसी समय हिरण्यकश्यपु के विरूद्ध संघर्ष का आरंभ करने वाला प्रह्लाद आगे आया और उसने कापुष समाज को सिंह बनाकर इस सनातन परम्परा को आगे बढ़ाया। इस सनातन धर्म की रक्षा हेतु चौबीस अवतार हुए चौबीस तीर्थंकर आए, जिन्होंने दुष्टात्माओं का शमन करते हुए युगानुकूल समाज जीवन खड़ा किया। कभी जड़वाद का उच्चाटन करने हेतु केरल कालड़ी से भगवान शंकराचार्य निकले तो कभी विद्यारण्य स्वामी ने संघर्ष में से विजयनर साम्राज्य स्थापित किया। घर बैठे यह धर्म शाश्वत नहीं है। इस्लाम एवं ईसाइयत के काल में भी संघर्ष का बिगुल बजा साथ ही सन्तों की एक लम्बी परम्परा ने भक्ति की गंगा बहाकर सनातन जीवन मूल्यों की रक्षा करते हुए इस धर्म को सनातन बनाए रखा।

कभी-कभी यह देखने में आता है कि कुद सन्त, महन्त कालबाह्य को पकड़कर उसे ही धर्म मानकर उसी का प्रतिपादन करते रहते हैं। धर्म तो समाज में व्यवस्था निर्माण करता है। जो समाज की धारणा करते हुये समाज जीवन को अद्यावत रखे वही तो धर्म है।

धारणाद्धर्ममित्याहुधर्मो धारयते प्रजाः।
यत् स्याद्धारणसंयुक्तं स धर्म इति निश्चय॥
(महाभारत-कर्ण 69/58)

'धारण करने से लोग इसे धर्म कहते हैं। धर्म प्रजा को धारण करता है। जो धारणा के साथ रहे, वह धर्म है-यह निश्चय है।' निरूक्त में धर्म शब्द का अर्थ 'नियम' बताया गया है। जिन नीति, नियमों, कानून-कायदों, रीति-रिवाजों, मर्यादाओं, परम्पराओं तथा कर्तव्यों द्वारा लोक या संसार में एकता, एकात्मता, बन्धुता, समता-समरसता निमाण होती है वही धर्म है और जिनके कारण से उपर्युक्त एकता खंडित होती है वे कानून, रीति, परम्परा, कर्तव्य, मर्यादा, अधर्म हैं। इस कसौटी पर इस देश में आज प्रचलित स्मृतियों पर दृष्टिपात करें तो ध्यान में आयेगा कि प्रत्येक में ऐसी अनेक बातें हैं जिनके कारण यह हिन्दू समाज टूटकर मृत्यु को प्राप्त हो जायेगा। कानून, रीतियाँ परिवर्तनशील हैं। एक सनातन समाज व राष्ट्र, धर्म को शाश्वत बनाए रखने हेतु धर्म के मूल अधिष्ठान के प्रकाश में परिवर्तन स्वीकार करता है। एकात्मता को स्वीकार करने वाला, राम नाम को पतित पावन कहने वाला यह हिन्दू समाज और उसके सन्त भेद प्रतिपादित करने लगें तो विचार और आचार की एकता कैसे प्रतिष्ठित होगी और यह धर्म सनातन कौ रह सकेगा?

जो चीज वेद विरूद्ध है मान्य नहीं है। क्या वेदों द्वारा भेदाभेद का प्रतिपादन है? यदि नहीं है तो वर्तमान परिपेक्ष्य में विद्वत समाज को आगे बढ़कर स्मृतियों का प्रक्षालन करके एक नवीन हिन्दू स्मृति का सृजन करना चाहिए। यह स्मृति ऐसी हो जिससे हिन्दू समाज की गति बढ़े और यह अगस्त्य के समान सबका पाचन कर अद्यावत बना रहे। समय की माँग है कि सत्य, सनातन को इतना तेजोमय करें जिससे असत्यधर्मियों, विधर्मियों, अधर्मियों का नामशेष होकर सर्वत्र यही प्रतिपादित हो-

धर्मः सनातनस्सत्यं सत्यं बह्म सनातम्।
वेदस्योपनिषत्सत्यं सत्यस्योपनिषद्दमः॥
दमस्योपनिषन्मोक्ष एतत्सर्वानुशासनम्॥

सत्य सनातन धर्म है, सत्य सनातन बह्म है। वेदों का रहस्य सत्य है, सत्य का रहस्य इन्द्रियों और मन का दमन है, दमन का रहस्य मोक्ष है। यही सबके लिए अनुशासन है। ❑

अनमोल वचन

अगर आप उन बातों एवं परिस्थितियों की वजह से चिंतित हो जाते है, जो आपके नियंत्रण में नहीं तो इसका परिणाम समय की बर्बादी एवं भविष्य पछतावा है।

ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियाँ पहले से हमारी हैं। वो हमीं हैं जो अपनी आँखों पर हाथ रख लेते हैं और फिर रोते हैं कि कितना अन्धकार है।

हम चाहें तो अपने आत्मविश्वास और मेहनत के बल पर अपना भाग्य खुद लिख सकते है और अगर हमको अपना भाग्य लिखना नहीं आता तो परिस्थितियाँ हमारा भाग्य लिख देंगी।